Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۙ⊙

(सूरत आले-इम्रान आयत :105)

अनुवाद: और उन लोगों की तरह न हो जो अलग अलग हो गए और उन्होंने मतभेद किया इस के बाद के उन के पास खुले खुले निशान आ चुके थे और यही हैं वे जिन के लिए बड़ा अज़ाब निर्धारित है

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 31

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

28 ज़िल्कअद: 1440 हिजरी कमरी 1 वफा 1397 हिजरी शमसी 1 अगस्त 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

अगर तुम अपने बच्चों को ईसाइयों, आर्यों और दूसरों की सोहबत से नहीं बचाते या कम से कम नहीं बचाना चाहते तो याद रखो ना सिर्फ अपने ऊपर बल्कि क़ौम पर और इस्लाम पर ज़ुल्म करते हो और बड़ा भारी ज़ुल्म करते हो। इस के यह अर्थ हैं कि मानो तुम्हें इस्लाम की कुछ ग़ैरत नहीं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त तुम्हारे दिल में नहीं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

सच्चा फ़लसफ़ा क़ुरआन में है

मगर वह सच्चा फ़लसफ़ा उन को नहीं मिला जो इलहाम इलाही से पैदा होता है जो क़ुरआन करीम में कूट कूट कर भर दिया है वह उनको और सिर्फ उनको दिया जाता है जो बहुत अधिक विनय और विनम्रता से अपने आप को अल्लाह के दरवाज़े पर फेंक देते हैं। जिनके दिल और दिमाग़ से अहंकार पूर्ण बातों की बदबू निकल जाती है और जो अपनी कमज़ोरियों को स्वीकार करते हुए गिड़गिड़ा कर सच्ची उबूदीयत का इक़रार करते हैं।

नवीन ज्ञान को इस्लाम के अधीन करना चाहिए

अत: ज़रूर है कि आजकल धर्म की सेवा और अल्लाह का नाम ऊंचा करने के लिए नए ज्ञान प्राप्त करो और बड़ी कोशिश से हासिल करो लेकिन मुझे यह भी अनुभव है जो सावधान करने के लिए मैं वर्णन कर देना चाहता हूँ कि जो लोग ज्ञान ही में एक तरफ़ा पड़ गए और ऐसे लीन और मुग्ध हुए कि किसी दिल वाले और ज़िक्र वाले के पास बैठने का उनको अवसर ना मिला और ख़ुद अपने अंदर इलाही नूर ना रखते थे वे भी प्राय ठोकर खा गए और इस्लाम से दूर जा पड़े और बजाय इस के कि इन उलूम को इस्लाम के अधीन करते उल्टा इस्लाम को ज्ञानों के अधीन करने की व्यर्थ कोशिशें कर के अपनी कल्पना में धार्मिक और क़ौमी ख़िदमतों के करने वाले बन गए। मगर याद रखो कि यह काम वही कर सकता है अर्थात धार्मिक सेवा वही कर सकता है जो आसमानी रोशनी अपने अंदर रखता है।

बात यह है कि इन ज्ञानों की शिक्षाएं पादरियत और फ़लसफ़ियत के रंग में दी जाती हैं नतीजा यह होता है कि इन शिक्षाओं का पसन्द करने वाला कुछ दिन तो सुधारणा के कारण जो उस की फ़ितरत को हासिल होता है इस्लाम की रस्मों का पाबंद रहता है लेकिन जूँ-जूँ इधर क़दम बढ़ाता चला जाता है इस्लाम को दूर छोड़ता जाता है और आख़िर वे रस्में ही रह जाती हैं और हक़ीक़त से कुछ सम्बन्ध नहीं रहता। यह नतीजा पैदा होता है और हुआ है एक तरफ़ा उलूम की तहक़ीक़ात और शिक्षा में लीन होने का। बहुत से क़ौमी लीडर कहला कर भी इस भेद को नहीं समझ सके कि उलूम जदीदा को प्राप्त करना जब ही लाभदायक हो सकता है जब केवल धार्मिक सेवा की नीयत से हो और किसी दिल वाले और आसमानी अक़्ल अपने अंदर रखने वाले मर्दे ख़ुदा की संगत से फ़ायदा उठाया जाए।

मेरा ईमान यही कहता है कि इस नास्तिकता के फैलने की यही वजह है कि जो शैतानी हमले इल्हाद के ज़हर से भरे हुए उलूम तिब्बी, फ़लसफ़ी या हैयत दानों की तरफ़ से इस्लाम पर होते हैं उनके मुक़ाबला करने के लिए या उनका जवाब देने के लिए इस्लाम और आसमानी नूर को असहाय समझ कर अक्ली ढकोसलों और काल्पनिक और क़यासी दलीलों को काम में लाया जाता है, जिसका नतीजा यह होता है कि ऐसे जवाब देने वाले क़ुरआन करीम के अर्थों और उद्देश्यों से कहीं दूर जा पड़ते हैं और एक छुपी हुई नास्तिकता का पर्दा अपने दिल पर डाल लेते हैं जो एक वक़्त आकर अगर अल्लाह तआला अपना फ़ज़्ल ना करे नास्तिकता का लिबास पहन लेता है और वही रंग दिल को देता है जिस से वह हलाक हो जाता है।

आजकल के शिक्षा प्राप्त करने वालों पर एक और बड़ी आफ़त जो आकर पड़ती है वह यह है कि उनको धार्मिक ज्ञानों से कुछ भी सम्पर्क ही नहीं होता। फिर जब वह किसी हैयतदान या फ़लसफ़ा जानने वाले के एतराज़ पढ़ते हैं तो इस्लाम के बारे में शंकाओं और कुधारणा उनको पैदा हो जाते हैं। फिर वे ईसाई या नास्तिक बन जाते हैं। ऐसी हालत में उनके माता पिता भी उन पर बड़ा ज़ुल्म करते हैं कि वे धार्मिक ज्ञानों के प्राप्त करने के लिए ज़रा सा वक़्त भी उनको नहीं देते और आरम्भ से ही से ऐसे धंदों और बखेड़ों में डालते हैं जो उन्हें पवित्र धर्म से वंचित कर देते हैं।

धार्मिक शिक्षा तथा तर्बीयत का सही वक़्त

यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि धार्मिक ज्ञान को प्राप्त करने के लिए बचपन का ज़माना बहुत ही उचित और उपयोगी है। जब दाढ़ी निकल आई फिर ज़रब यज़रेबो याद करने बैठे तो क्या ख़ाक होगा? बचपन की स्मृति बहुत तेज़ होती है। इन्सानी उम्र के दूसरे वक़्त में ऐसी स्मृति कभी भी नहीं होता। मुझे ख़ूब याद है कि कुछ बचपनें की बातें तो अब तक याद हैं लेकिन पंद्रह वर्ष पहले की अक्सर बातें याद नहीं। इस की वजह ये है कि पहली उम्र में इल्म के नुक़ूश ऐसे तौर पर अपनी जगह कर लेते हैं और शक्तियों के बढ़े होने की उम्र होने के कारण ऐसे दिलनशीं हो जाते हैं कि फिर नष्ट नहीं हो सकते। अत: यह एक लम्बी बात है। सारांश यह है कि शैक्षिक तरीक़े में इस बात का ध्यान और ख़ास तवज्जा चाहिए कि धार्मिक शिक्षा आरम्भ से ही हो। मेरी आरम्भ से यही इच्छा रही है और अब भी है। अल्लाह तआला उस को पूरा करे। देखो तुम्हारी पड़ोसी क़ौमों अर्थात आर्यों ने कितनी हैसियत शिक्षा के लिए बनाई। कई लाख से ज़्यादा रुपया जमा कर लिया। कॉलेज की आलीशान इमारत और सामान भी पैदा किया। अगर मुस्लमान पूरे तौर पर अपने बच्चों की शिक्षा की तरफ़ ध्यान ना करेंगे तो मेरी बात सुन रखें कि एक वक़्त उनके हाथ से बच्चे भी जाते रहेंगे।

संगत का प्रभाव

उपमा प्रसिद्ध है "तुख़्म तासीर सोहबत रा असर" इस के प्रथम भाग पर आपत्ति हो तो हो लेकिन दूसरा हिस्सा सोहबत रा असर ऐसा प्रमाणित मामला है कि इस पर ज़्यादा बेहस करने की हमको ज़रूरत नहीं। हर एक शरीफ़ क़ौम के बच्चों का ईसाइयों के फंदे में फंस जाना और मुस्लमानों यहां तक कि ग़ौस तथा क़ुतुब कहलाने वालों की औलाद और सय्यदों के बेटों का रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम की शान में गुस्ताख़ियाँ करते देख चुके हो। इन सही नस्ल वाले सय्यदों की औलाद जो अपना सिलसिला हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाह अन्हो तक पहुंचाते हैं, हम ने ईसाई देखा है और इस्लाम के संस्थापक आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-3)

हुज़ूर अनवर का अमन का पैग़ाम बहुत शानदार था, यद्यपि कि मैं कैथोलिक हूँ, लेकिन हुज़ूर अनवर के एक एक शब्द से इत्तिफ़ाक़ करती हूँ, मैं यक़ीन से कहती हूँ कि इस्लाम अमन का पैग़ाम देता है,इस्लाम इन्सानियत की सेवा का दर्स देता है, पड़ोसियों के बारे में से हुज़ूर अनवर का पैग़ाम बहुत ही ज़रूरी है।

हुज़ूर अनवर ने जो यह फ़रमाया है कि हम आप लोगों के आँसू पूँछेंगे, कितने लोग हैं जो यह कह सकते हैं, यह बहुत हैरतअंगेज़ था, मैं अपने भावनाओं पर क़ाबू नहीं रख सकी, मैंने कोई रहनुमा ऐसा नहीं देखा, चाहे कोई स्यासी लीडर हो, मज़हबी हो, या कोई भी, हमारे पास ऐसा कोई लीडर नहीं, हुज़ूर की मौजूदगी में एक अजीब सुकून है, मेरा यक़ीन करें, यह बहुत अजीब एहसास है, आपने मुझे यक़ीन दिला दिया है कि आप मेरी परेशानी और ज़रूरत के वक़्त मेरे साथ होंगे,मेरी बहुत ही ख़ुश-क़िसमती है कि मैं यहां आई हूँ।

अमरीका के पहले अहमदी जॉर्ज बेकर साहिब का वर्णन और उन की क़ब्र पर दुआ,

मस्जिद बैतुल आफ़ियत के उद्घाटन के अवसर पर सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का ख़िताब सुन कर मेहमानों के ईमान वर्धक विचार

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

19 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक जुमा) (बाक़ी रिपोर्ट)

मस्जिद बैतुल आफ़ियत के उद्घाटन के अवसर पर हुज़ूर अनवर के ख़िताब के बाद मेहमानों के विचार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के आज के ख़िताब ने मेहमानों पर गहरा असर छोड़ा और बहुत से मेहमानों ने अपने विचार का प्रकट किया।

*फ़िलाडेल्फ़िया शहर के मेयर Jim Kenney ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: मेरा जमाअत के लोगों से दो साल पहले सम्पर्क हुआ था। इस वक़्त यह बुनियाद आरंम्भिक स्तर में थी। अब यह बहुत उम्दा और ख़ूबसूरत इमारत बन चुकी है। यह एक बहुत बड़ी घोषणा है। यह जगह बहुत ही मुनासिब है। मैं जमाअत के बारे में कहना चाहता हूं कि यह सेवा करने पर यक़ीन रखते हैं। हम सब और इस शहर के वासियों को यही सेवा चाहिए। अगर इस मस्जिद में आने वाले हमारे आसपास के पड़ोस में लोगों को उनके बच्चों को अच्छा शहरी बनाने में कामयाब हो जाते हैं और उनमें एहसास ज़िम्मेदारी और संजीदगी स्थापित कर दें तो यह हमारे शहर और इस इलाक़ा के लिए एक बहुत बड़ी तब्दीली होगी।

हुज़ूर अनवर से मिलकर बहुत अच्छा लगा। आप एक महान रुहानी व्यक्तित्व हैं। आप खुले दिल के हैं। हुज़ूर की मौजूदगी का एहसास ही हमें यह महसूस करवाता है कि यह कितनी महान व्यक्तित्व हैं और इसी वजह से अल्लाह ने उन्हें इस महान मुक़ाम के लिए चुना है। हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात बहुत शानदार रही। आपने फ़िला-डेल्फ़िया के हालात और हुकूमत के बारे में से सवाल किए। आपने यहां की इंडस्ट्री और पैदा होने वाली चीज़ों के बारे में से पूछा। खेती के बारे में बात हुई। तो आपको हमारी फ़िक्र थी। मेयर और कौंसल के इख़्तयारात के बारे में बात हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से यह सारी बातचीत बहुत ही दिलचस्प रही।

इस देश में मज़हबी आज़ादी है। यहां कई धर्मों के लोग आबाद हैं। मैं ज़ाती तौर पर एक ख़ुदा पर यक़ीन रखता हूँ। हमारा काम यह है कि हम सब मिलकर समाज की बेहतरी के लिए अपनी सलाहीयतें काम में लाएं। मेरा ख़्याल है कि ख़ुदा हम से यही चाहता है।

यहां पर आप लोगों ने बहुत बड़ी घोषणा की है , मेरा ख़्याल है कोई छ: सात मिलियन डालर की। यह एक दूसरे की मदद करने की एक रोशन उदाहरण है। मुसलमान एक दूसरे की मदद करने में बहुत सख़ी हैं। आप लोगों में दूसरों की मदद का जज़बा बहुत उदाहरणी है।

हुज़ूर अनवर का पैग़ाम बहुत ही शानदार है। यह अमन, प्यार और मुहब्बत ही है , जिसके द्वारा से हम मिल कर तरक़्क़ी कर सकते हैं और इस शहर को और अधिक भाईचारा में बढ़ा सकते हैं। हुज़ूर अनवर के पैग़ाम से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। हुज़ूर अनवर बहुत व्यापक दृष्टि वाले हैं, बहुत शफ़ीक़ और मानव जाति की मदद करने वाले इन्सान हैं। बहुत प्रभावित करने वाला व्यक्तित्व है।

*कांग्रेस मैन Dwight Evans ने अपने विचार का प्रकट करते हुए कहा: हुज़ूर अनवर ने अमन स्थापित करने के बारे में से बहुत ही उम्दा पैग़ाम दिया है। बदक़िस्मती से हम अमरीका में एक अन्धकार वाले समय से गुज़र रहे हैं और ऐसे दौर में यह पैग़ाम बहुत शानदार था। इस से साबित होता है कि मुसलमान कम्यूनिटी ना सिर्फ अमरीका बल्कि सारी दुनिया के लिए कितनी अहम है। बतौर कांग्रेस मैन में हुज़ूर अनवर को दिली स्वागत कहता हूँ।

हमें मुस्तक़बिल में उम्मीद और अमन चाहिए। फ़िलाडेल्फ़िया की मज़हबी आज़ादी के बारे में से एक महत्व है और यह मक़ाम आप लोगों की मस्जिद के लिए एक शानदार मुक़ाम साबित होगा। मैं दिल की गहराईयों से हुज़ूर अनवर को और आपकी जमाअत को इस मस्जिद की मुबारकबाद पेश करता हूँ और बतौर यू एस कांग्रेस मैन में यह कहता हूँ कि मैं हर वक़त आप और आपकी जमाअत के साथ खड़ा हूँ। हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात बहुत दिलचस्प रही। ख़ुराक के बारे में बात हुई। मेरा सम्बन्ध चूँकि खेती से है इसलिए फ़ूड पालिसी पर बात हुई। विश्वव्यापी सतह पर यह मामला बहुत महत्तव रखता है। हुज़ूर अनवर से इस बारे में बात कर के बहुत ख़ुशी हुई।

*इस प्रोग्राम में एक जज Harry Schwartz भी शामिल हुए थे। अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहते हैं: यहां बुलाया जाना मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है। बहुत से अहमदियों से मुलाक़ात हुई है। मैं इस जमाअत से 25 साल से वाक़िफ़ हूँ। कई साल से यहां के लोकल सदर मेरे अच्छे दोस्त और पड़ोसी हैं। कई बार उनसे डिनर पर विभिन्न मस्लों पर बात हुई है। मैं समझता हूँ कि एक दूसरे के मस्लों को हल करने के लिए मिल बैठना बहुत ज़रूरी है। हुज़ूर अनवर की व्यक्तित्व बहुत शानदार है। आप ने कई जगहों का दौरा किया है और ख़िताब किया है। हुज़ूर अनवर का मुहब्बत, आपसी मुहब्बत और मिल बैठने का पैग़ाम अगर समझ लिया जाए तो मेरे ख़्याल में हम सब बहुत बेहतर हालत में हों।

*फ़िलाडेल्फ़िया पुलिस डिपार्टमैंट से एक कैप्टन भी इस प्रोग्राम में शरीक थे। अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहते हैं :मुझे यहां कैप्टन के तौर पर काम करते हुए दो साल हुए हैं और इस मस्जिद की बुनियाद सात साल पर आधारित रही है। हमारे यहां विभिन्न कम्यूनिटीज़ के साथ क़रीबी सम्बन्ध हैं। हमारी कोशिश होती है कि हम एक दूसरे के क़रीब आएं। यह मस्जिद इस कम्यूनिटी का एक नया रुख

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अगर जंगल के दरिंदे मदीना में दाख़िल हो कर मुझे उठा ले जाएं तो भी वह काम करने से रुकूंगा नहीं जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने करने का हुक्म दिया है।

ख़ुदा की क़सम ! वह भी अपने अंदर अमीर बनने के गुण रखता था अर्थात हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि और इस के बाद उस का बेटा भी अपने अंदर अमीर बनने के गुण रखता है

वह (हज़रत ज़ैद बिन हारसह रज़ि) उन लोगों में से था जो मुझे सबसे ज़्यादा महबूब हैं इस अर्थात उसामा के लिए ख़ैर की नसीहत पकड़ो क्योंकि यह तुम में से बेहतरीन लोगों में से है

हज़रत ज़ैद बिन हारसह और हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ी अल्लाह अन्हुमा की मुबारक सीरत का वर्णन

वक्त के ख़लीफ़ा की ज़यारत और इल्म की प्राप्ति के शौक़ में अफ़्रीक़ा से पैदल पाकिस्तान सफ़र करने वाले मुबल्लिग़ सिलसिला एवरीकोस्ट आदरणीय मुहम्मद सिद्दीक़ दुमबया (Dumbia) साहिब और तब्लीग़ में व्यस्त मुरब्बी सिलसिला आदरणीय ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब (बरोनडी) के पिता आदरणीय मियां ग़ुलाम मुस्तफ़ा साहिब आफ़ मेरिक ज़िला गुजरांवाला की वफ़ात पर उनका ज़िक्रे ख़ैर नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 जून 2019 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद (टिलफोर्ड सर्रे), यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि के ज़िक्र में कुछ अन्य घटनाएं और हवाले हैं जिन्हें आज में पेश करूँगा। हज़रत ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि एक सरिया जो रबीउल आख़िर सन 6 हिज्री में बनू सुलैम की तरफ़ भेजा गया था उस का ज़िक्र करते हुए सीरत ख़ात्मुल अंबिया में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि

महीना रबीउल आख़िर 6 हिज्री में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने आज़ाद किए ग़ुलाम और साबिक़ मतबन्नाई ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि की इमारत में कुछ मुसलमानों को क़बीला बनी सुलैम की तरफ़ रवाना फ़रमाया। यह क़बीला उस वक़्त नजद के इलाक़े में जमूम नामक स्थान पर आबाद था और एक समय से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ जंग कर रहा था, साज़िशें करता रहता था, जंगों की कोशिश करता था। अत: जंग ख़ंदक़ में भी इस क़बीला ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ स्पष्ट हिस्सा लिया था। जब ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि और उन के साथी जमूम में पहुंचे जो मदीना से लगभग पच्चास मील के दूरी पर था तो वहां कोई नहीं था, ख़ाली जगह देखी मगर उन्हें क़बीला मुज़ैनह की एक औरत हलीमा नामक जो मुख़ालफ़ीन इस्लाम में से थी उसने उस जगह का पता बता दिया जहां उस वक़्त क़बीला बनू सुलैम का एक हिस्सा अपने जानवर, मवेशी चरा रहा था। अत: इसी सूचना से फ़ायदा उठा कर ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि ने इस जगह पर छापा मारा और इस अचानक हमला से घबरा कर अक्सर लोग तो इधर उधर भाग कर फैल गए मगर कुछ क़ैदी और मवेशी मुसलमानों के हाथ आ गए जिन्हें वह लेकर मदीना की तरफ़ वापस लौटे। संयोग से उन क़ैदीयों में हलीमा का पति भी था और यद्यपि कि वह जंगी विरोधी था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हलीमा की इस सहायता की वजह से ना सिर्फ हलीमा को बिना फ़िद्या आज़ाद कर दिया बल्कि उस के पति को भी एहसान के तौर पर छोड़ दिया और हलीमा और इस का पति ख़ुशी ख़ुशी अपने वतन को वापस चले गए।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 669)

हज़रत ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि के एक और सरिया, जो जमादी अल्लाअल्ला सन छ: हिज्री में इस स्थान की तरफ़ भेजा गया था, उस का ज़िक्र करते हुए सीरत ख़ात्मुल अंबिया में लिखा है कि

ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि क़व्वास मुहिम यानी बनू सुलैमकी तरफ़ जो सरिया गया था इस से वापस आए ज़्यादा दिन नहीं गुज़रे थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जमादी अल्लाअल्ला के महीना में उन्हें एक सौ सत्तर सहाबा की कमान में फिर मदीना से रवाना फ़रमाया और इस मुहिम की वजह सीरत वालों ने यह लिखी है कि सीरिया की तरफ़ से क़ुरैश मक्का का एक क़ाफ़िला आ रहा था और इस की रोक-थाम के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस दस्ता को रवाना फ़रमाया था।

यहां यह वज़ाहत भी कर दूं कि क़ुरैश के क़ाफ़िले प्राय हमेशा हथियार लगाए होते थे और मक्का और सीरिया के मध्य आते-जाते हुए वह मदीना के बिलकुल क़रीब से गुज़रते थे जिसकी वजह से उनकी तरफ़ से हर वक़्त ख़तरा रहता था। इस के इलावा यह क़ाफ़िले जहां-जहां से गुज़रते अरब के क़बीलों को मुसलमानों के ख़िलाफ़ उक्साते जाते थे। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं जिसकी वजह से सारे मुल्क में मुसलमानों के ख़िलाफ़ शत्रुता की एक ख़तरनाक आग भड़क चुकी थी इसलिए उनकी रोकथाम ज़रूरी थी। बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ाफ़िले की ख़बर पाकर ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि को इस तरफ़ रवाना फ़रमाया और वह इस होशयारी से घात लगाते हुए आगे बढ़े कि किसी को पता ना लगे और ईस के स्थान पर क़ाफ़िले को जा पकड़ा। ईस एक जगह का नाम है जो मदीना से चार दिन की दूरी पर समुंद्र की तरफ स्थित है। चूँकि यह अचानक हमला था, क़ाफ़िला वाले मुसलमानों के हमला का मुकाबला ना करसके और अपना हथियार तथा सामान छोड़कर भाग गए। ज़ैद ने कुछ क़ैदी पकड़ कर और क़ाफ़िला का सामान अपने क़ब्ज़ा में लेकर मदीना की तरफ़ वापसी की और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो गए।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 670)

यह याद रखना चाहिए हर सरिया या जो भी जंग हुई, जो भी लश्कर भेजा गया वह इसलिए कि कुछ ना कुछ क़ाफ़िलों की तरफ़ से यह ख़बर होती थी कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ कोई साज़िशें कर रहे हैं या कोई मंसूबा कर के हमलों के बारे में सोच रहे हैं। फिर हज़रत ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि के एक और सरिया जो जमादी अल-आख़िर सन छ: हिज्री में तरफ़ नामक स्थान की तरफ़ भेजा गया था उस का ज़िक्र भी मिलता है। इस का हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने भी ज़िक्र किया है कि

जंग बनू लिह्यान के कुछ समय बाद जमादी अल-आख़िर 6 हिज्री में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि की कमान में पंद्रह सहाबियों का एक दस्ता तरफ़ की जानिब रवाना फ़रमाया जो मदीना से 36 मील के दूरी पर स्थित था और इस जगह इन दिनों में बनू सअलबह के लोग आबाद थे मगर इस के पहले कि ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि वहां पहुंचते उस क़बीला के लोग वक़्त पर ख़बर पा कर इधर उधर फैल हो गए और ज़ैद रज़ि और उन के साथी कुछ दिन की गैरहाज़िरी के बाद कुछ दिन वहां निवास किया और फिर मदीना में वापस लौट आए।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 680-681)

और कोई जंग नहीं की , ना उनको तलाश किया।

फिर ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि का एक और सरिया है जो जमादी अल-आख़िर सन 6 हिज्री में हिसमा की तरफ़ भेजा गया था। इस का ज़िक्र करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि फ़रमाते हैं कि

इसी महीने जमादी अल-आख़िर में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ैद

पुत्र हारसह रज़ि को पाँच सौ मुसलमानों के साथ हिसमा की तरफ़ रवाना फ़रमाया ,जो मदीना के उत्तर की तरफ़ बनू जुज़ाम का निवास था, वह वहां रहते थे। इस मुहिम का उद्देश्य यह था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी जिन का नाम दिहयह कलबी रज़ि था ,सीरिया की तरफ़ से क़ैसर रुम को मिलकर वापस आ रहे थे और उन के साथ कुछ सामान भी था जो कुछ तो क़ैसर की तरफ़ से ख़िलअत इत्यादि की सूरत में था और कुछ तिजारती सामान था। जब दिहयह रज़ि बनू जुज़ाम के इलाक़ा के पास से गुज़रे तो इस क़बीला के रईस हुनैद पुत्र आरिज़ ने अपने क़बीला में से एक जमाअत को अपने साथ लेकर दिहयह पर हमला कर दिया और सारा सामान छीन लिया, तिजारती सामान भी और जो कुछ क़ैसर ने दिया था । यहां तक ज़्यादती की कि दहीह रज़ि के जिस्म पर भी सिवाए फटे हुए कपड़ों के कोई चीज़ नहीं छोड़ी। जब इस हमला का इल्म बनू ज़ुबैब को हुआ जो क़बीला बनू जुज़ाम ही की एक शाख़ थे और उन में से कुछ लोग मुसलमान हो चुके थे तो उन्होंने बनू जुज़ाम की इस पार्टी का पीछा कर के उनसे लूटा हुआ सामान वापस छीन लिया और दिहयह रज़ि इस सामान को लेकर मदीना वापस पहुंचे जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबी थे। यहां आकर दिहयह रज़ि ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सारे हालात से सूचना दी जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि को रवाना फ़रमाया और दिहयह रज़ि को भी ज़ैद रज़ि के साथ भिजवा दिया। ज़ैद रज़ि का दस्ता बड़ी होशयारी और सावधानी के साथ दिन को छुपता था और रात को सफ़र करता था और यह सफ़र करते हुए हिसमा की तरफ़ बढ़ते गए और ठीक सुबह के वक़्त बनू जुज़ाम के लोगों को जा पकड़ा। बनू जुज़ाम ने मुक़ाबला किया, बाक़ायदा जंग हुई मगर मुसलमानों के अचानक हमला के सामने उनके पांव जम ना सके और थोड़े से मुक़ाबला के बाद वह भाग गए और मैदान मुसलमानों के हाथ रहा और ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि बहुत सा सामान और माल मवेशी और एक सौ के क़रीब क़ैदी पकड़कर वापस आ गए। मगर अभी ज़ैद रज़ि मदीना में पहुंचे नहीं थे कि क़बीला बनू ज़ुबैब के लोगों को जो बनू जुज़ाम की शाख़ थे ज़ैद रज़ि की इस मुहिम की ख़बर पहुंच गई और वह अपने रईस रिफ़ाअह पुत्र ज़ैद के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और वहां जा के कहा कि या रसूलुल्लाह! हम मुसलमान हो चुके हैं, जैसा कि ज़िक्र हुआ उन लोगों ने तो सामान छुड़ाया था। और हमारी बक़ी क़ौम के लिए अमन की तहरीर हो चुकी है, (मुआहदा हो चुका है कि उनको अमन भी मिलेगा)तो फिर हमारे क़बीला को इस हमला में क्यों शामिल किया गया है। इस हमले में उनके क़बीले के कुछ लोग भी शामिल हो गए थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ यह ठीक है मगर ज़ैद रज़ि को इस का इल्म नहीं था और फिर जो लोग इस मौक़ा पर मारे गए थे उनके बारे में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बार-बार अफ़सोस का इज़हार किया। इस पर रिफ़ाअह के साथी अबूज़ैद ने कहा हे रसूल अल्लाह! जो लोग मारे गए हैं उनके बारे में हमारी कोई मांग नहीं यह एक ग़लतफ़हमी का हादसा था जो हो गया कि हमारे जो मुआहदा वाले लोग थे जंग में उनको भी शामिल कर कर लिया गया मगर जो लोग ज़िंदा हैं और जो हथियार तथा सामान ज़ैद रज़ि ने हमारे क़बीला से पकड़ा है वह हमें वापस मिल जाना चाहिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ यह बिलकुल दरुस्त है और आप (स) ने फ़ौरन हज़रत अली रज़ि को ज़ैद रज़ि की तरफ़ रवाना फ़रमाया और बतौर निशानी के उन्हें अपनी तलवार प्रदान फ़रमाई और ज़ैद रज़ि को कहला भेजा कि इस क़बीला के जो क़ैदी और माल पकड़े गए हैं, जो भी माल तुम ने पकड़ा है वह छोड़ दो। ज़ैद रज़ि ने यह हुक्म पाते ही शीघ्रम सारे क़ैदीयों को छोड़ दिया और उनका माल ग़नीमत भी उन्हें वापस लौटा दिया।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखत हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 681-682)

अत: यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुआहिदों के सम्मान का उस्वा था। यह नहीं कि पकड़ लिया तो ज़ुल्म करना है बल्कि ग़लत फ़हमी से जो कुछ हुआ, कुछ क़बीला शामिल था और हो सकता है कि उनमें से कुछ जानबूझ के भी शामिल हुए हूँ लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सबको छोड़ दिया और उनका मालतथा सामान भी उनको वापस कर दिया।

फिर हज़रत ज़ैद रज़ि के एक और सरिया जो रजब 6 हिज्री में वादी अलक़ुरा की तरफ़ भेजा गया था उस का ज़िक्र भी मिलता है।

सरिया हिसमा के लगभग एक महीना बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि को वादी अलक़ुरा की तरफ़ रवाना फ़रमाया। जब ज़ैद रज़ि का दस्ता वादी अलक़ुरा में पहुंचा तो बनू फ़ज़ारा के लोग उनके मुक़ाबला के लिए तैयार थे। अत: इस युद्ध में कई मुसलमान शहीद हुए और ख़ुद ज़ैद रज़ि को भी सख़्त ज़ख़्म आए मगर ख़ुदा ने अपने फ़ज़ल से बचा लिया। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि वादी अलक़ुरा जिसका उस सरिया में ज़िक्र हुआ है वह मदीना से उत्तर की तरफ़ सीरिया के रास्ता पर एक आबाद वादी थी जिसमें बहुत सी बस्तियां आबाद थीं और इसी लिए उस का नाम वादी अलक़ुरा पड़ गया था। अर्थात बस्तियों वाली वादी।

सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 682-683)

सरिया मुतह 8 हिज्री में हुआ। मूतह बलका के क़रीब मुल्क सीरिया में एक स्थान है। इस सरिया के कारणों का बयान करते हुए अल्लामा इब्ने साद लिखते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हारिस पुत्र अमीर रज़ि को क़ासिद बना कर बसरा के बादशाह के पास ख़त देकर भेजा। जब वह मुतह के स्थान पर उतरे तो उन्हें शुरहबील पुत्र अमरो ग़स्सानी ने शहीद कर दिया। हज़रत हारिस पुत्र अमीर रज़ि के इलावा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का और कोई क़ासिद शहीद नहीं किया गया। बहरहाल यह दुर्घटना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बहुत दुख देने वाली गुज़री। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को बुलाया तो वह तेज़ी से जुरफ़ स्थान पर जमा हो गए जिनकी संख्या तीन हज़ार थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सब के अमीर ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि हैं और एक सफ़ेद झंडा तैयार कर के हज़रत ज़ैद रज़ि को देते हुए यह नसीहत की कि हारिस पुत्र अमीर रज़ि जहां शहीद किए गए हैं वहां पहुंच कर लोगों को इस्लाम की दावत दें। अगर वह क़बूल कर लें तो ठीक है नहीं तो उनके ख़िलाफ़ अल्लाह तआला से मदद मांगें और उनसे जंग करें। सरिया मूतह जमादी उल अव्वल सन 8 हिज्री में हुआ।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 2 पृष्ठ 98-97 सरिया मूता प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 34 ज़ैदा अलहुब पुत्र हारसह रज़ि प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र अमर रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सरिया मूतह के लिए हज़रत ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि को अमीर निर्धारित फ़रमाया फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर ज़ैद रज़ि शहीद हो जाएं तो जाफ़र रज़ि अमीर होंगे और अगर जाफ़र रज़ि भी शहीद हो जाएं तो अब्दुल्लाह पुत्र रवाहह रज़ि तुम्हारे अमीर होंगे। और इस लश्कर को जैशुल उमरा भी कहते हैं।

(सही अल-बख़ारी किताबुल मग़ाज़ी हदीस 4261)

(मस्नद अहमद पुत्र हंबल जिल्द 7 पृष्ठ 505 हदीस 22918 मस्नद अबू क़तादा अंसारी प्रकाशन आलिमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

सही बुख़ारी में भी इस का ज़िक्र है मस्नद अहमद पुत्र हंबल में भी। रिवायत में यह भी आता है कि हज़रत जाफ़र रज़ि ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि हे रसूल अल्लाह! मुझे कभी यह ख़्याल नहीं आया था कि आप ज़ैद रज़ि को मुझ पर अमीर फ़रमाएँगे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस बात को छोड़ो क्योंकि तुम नहीं जानते कि बेहतर क्या है।

(अत्तबकातुल कुबरा लेइब्न साद भाग 3 पृष्ठ34। ज़िक्र ज़ैद अलहब। दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो सरिया मूतह का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं ,यद्यपि इस घटना का कुछ थोड़ा सा ज़िक्र में कुछ हफ़्ते पहले या कुछ महीने पहले के ख़ुत्बों में भी कर चुका हूँ। बहरहाल दोबारा क्योंकि हज़रत ज़ैद रज़ि के हवाले से बात हो रही है तो फिर ज़िक्र कर देता हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं कि

इस सरिया का अफ़्सर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़ैद रज़ि को निर्धारित किया था मगर साथ ही यह इरशाद फ़रमाया था कि मैं इस वक़्त ज़ैद रज़ि को लश्कर का सरदार बनाता हूँ। अगर ज़ैद लड़ाई में मारे जाएं तो उनकी जगह जाफ़र रज़ि लश्कर की कमान करें। अगर वह भी मारे जाएं तो अब्दुल्लाह पुत्र रवाहह रज़ि कमान करें और अगर वह भी मारे जाएं तो फिर जिस पर मुसलमान मुत्तफ़िक़ हों वह फ़ौज की कमान करे। जिस वक़्त आप (स) ने यह इरशाद फ़रमाया उस वक़्त एक यहूदी भी आप (स) के पास बैठा हुआ था। उसने कहा कि मैं आप (स) को नबी तो नहीं मानता लेकिन अगर आप (स) सच्चे भी हों तो उन तीनों में से कोई भी ज़िन्दा बच कर नहीं आएगा क्योंकि नबी के मुँह से जो बात निकली है वह पूरी हो कर रहती है। पिछले कुछ महीने पहले जो ज़िक्र हुआ था इस में शायद यह ज़िक्र था कि यहूदी हज़रत ज़ैद रज़ि के पास गया और उनको यह कहा। तो बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने इस रिवायत को इस तरह दर्ज किया है कि वह यहूदी हज़रत ज़ैद रज़ि के पास गया और उन्हें बताया कि अगर तुम्हारा रसूल सच्चा है तो तुम ज़िन्दा वापस नहीं आओगे। हज़रत ज़ैद रज़ि ने फ़रमाया कि मैं ज़िन्दा आऊँगा या नहीं आऊँगा उस को तो अल्लाह ही जानता है मगर हमारा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़रूर सच्चा रसूल है। अल्लाह तआला की हिक्मत है कि यह घटना बिलकुल इसी तरह पूरी हुई। हज़रत ज़ैद रज़ि शहीद हुए। उनके बाद हज़रत जाफ़र रज़ि ने लश्कर की कमान संभाली वह भी शहीद हो गए। इस के बाद हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र रवाहह रज़ि ने लश्कर की कमान संभाली वह भी शहीद हुए और क़रीब था कि लश्कर में इंतिशार फैल जाता कि हज़रत ख़ालिद पुत्र वलीद रज़ि ने मुसलमानों के कहने से झंडे को अपने हाथ में पकड़ा और अल्लाह तआला ने उनके ज़रीया मुसलमानों को फ़तह दी और वह ख़ैरीयत से लश्कर को वापस ले आए।

(उद्धरित फ़रीज़ा तब्लीग़ और अहमदी ख़वातीन, अनवारुल उलूम जिल्द 18 पृष्ठ 405-406)

बुख़ारी में इस घटना की रिवायत इस तरह मिलती है। हज़रत अनस पुत्र मालिक से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ज़ैद रज़ि ने झंडा लिया और वह शहीद हुए। फिर जाफ़र रज़ि ने उसे पकड़ा और वह भी शहीद हो गए। फिर अब्दुल्लाह पुत्र रवाहह रज़ि ने झंडे को पकड़ा और वह भी शहीद हो गए और यह ख़बर देते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आँखों से आँसू बह रहे थे। फ़रमाया कि फिर झंडे को ख़ालिद पुत्र वलीद रज़ि ने बग़ैर सरदार होने के पकड़ा और उन्हें फ़तह हासिल हुई।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल जनाइज़ हदीस 1246)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक हज़रत ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि, हज़रत जाफ़र रज़ि और हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र रवाहह रज़ि की शहादत की ख़बर पहुंची तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनका हाल बयान करने के लिए खड़े हुए। हज़रत ज़ैद रज़ि के ज़िक्र से आरम्भ फ़रमाया। आप (स) ने फ़रमाया हे अल्लाह! ज़ैद रज़ि की मग़फ़िरत फ़र्मा। हे अल्लाह! ज़ैद रज़ि की मग़फ़िरत फ़र्मा। हे अल्लाह! ज़ैद रज़ि की मग़फ़िरत फ़र्मा। फिर आप (स) ने फ़रमाया कि हे अल्लाह! जाफ़र रज़ि और अब्दुल्लाह पुत्र रवाहह रज़ि की मग़फ़िरत फ़र्मा।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 34 ज़ैदा लहब पुत्र हारसह प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा बयान फ़रमाती हैं कि जब हज़रत ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि , हज़रत जाफ़र रज़ि और अब्दुल्लाह पुत्र रवाहह रज़ि शहीद हो गए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद में बैठ गए। आप (स) के चेहरे से गुम तथा दुख का इज़हार हो रहा था।

(सुनन अबी दाऊद किताबुल जनाइज़ हदीस 3122)

तबक़ाते कुब्रा में लिखा है कि जब हज़रत ज़ैद रज़ि शहीद हो गए तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके घर वालों के पास ताज़ियत के लिए तशरीफ़ लाए तो उनकी बेटी इस हाल में थी कि इस के चेहरे से रोने के चिन्ह ज़ाहिर हो रहे थे। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आँखों से भी आँसू जारी हो गए। हज़रत ज़ैद पुत्र अबादहओ ने निवेदन क्या या रसूल अल्लाह! यह किया है? आप (स) की आँखों से आँसू आ रहे हैं। आप (स) ने फ़रमाया। هٰذَا شَوْقُ الْحَبِيْبِ اِلَى حَبِيْبِهٖ यह एक महबूब की अपने महबूब से मुहब्बत है।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 34 ज़ैदा लहब पुत्र हारसह प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत ज़ैद रज़ि की शहादत का ज़िक्र करते हुए अल्लामा इब्ने साद लिखते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सरिया मूतह में हज़रत ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि को अमीर निर्धारित किया और दूसरे अमीरों पर आप को मुक़द्दम रखा। जब मुसलमानों और मुशरिकों का आपस में मुक़ाबला हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निर्धारित किए उमरा पैदल ही लड़ रहे थे। हज़रत ज़ैद रज़ि ने झंडा लिया और जंग की और दूसरे लोग भी आप के साथ मिलकर जंग कर रहे थे। लड़ाई के दौरान हज़रत ज़ैद रज़ि भाला लगने की वजह से शहीद हो गए और शहादत के वक़्त आप की उम्र 55 साल थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद रज़ि का जनाज़ा पढ़ाया और फ़रमाया कि हज़रत ज़ैद रज़ि के लिए मग़फ़िरत मांगें वह जन्नत में दौड़ते हुए दाख़िल हो गए हैं।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 33-34 ज़ैदा लहब पुत्र हारसह रज़ि प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत उसामह रज़ि ,जो हज़रत ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि के बेटे थे, बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें अर्थात हज़रत उसामह रज़ि को और हसन रज़ि को लेते और फ़रमाते कि हे अल्लाह! इन दोनों से मुहब्बत कर क्योंकि मैं इन दोनों से मुहब्बत रखता हूँ।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल फ़ज़ाइल अस्हाब उन्नबी बाब ज़िक्र उसामा पुत्र ज़ैद हदीस नम्बर 3735)

हज़रत जबलह रज़ि बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी जंग के लिए तशरीफ़ ना ले जाते तो आप (स) अपना हथियार सिवाए हज़रत अली रज़ि के या हज़रत ज़ैद रज़ि के किसी को ना देते।

(कंज़ुल अम्माल जिल्द 13 पृष्ठ 397 बाब फ़ज़ाइल सहाबा हर्फ़ अलज़ा ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि हदीस 37066 प्रकाशन मौसस अर्रसाला बेरूत 1985 ई)

हज़रत जबलह रज़ि फिर एक और रिवायत बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दो कुजावे तोहफ़े में दिए गए तो एक आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद रख लिया और दूसरा हज़रत ज़ैद रज़ि को दे दिया।

(कंज़ुल अम्माल जिल्द 13 पृष्ठ 397 बाब फ़ज़ाइल सहाबा हर्फ़ अलज़ा ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि हदीस 37067 प्रकाशन मौसस अर्रसाला बेरूत 1985 ई)

फिर हज़रत जबलह रज़ि की ही रिवायत है बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में दो जुब्बे तोहफा के रूप में दिए गए, तोहफ़ा के तौर पर पेश हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक ख़ुद रख लिया और दूसरा हज़रत ज़ैद रज़ि को अता फ़रमाया।

(अल-मुसतदरक अली अस्सहीहीन लिल्हाकिम जिल्द 3 पृष्ठ 241 किताब मारफत अस्सहाब:, ज़िक्र मनाक़िब ज़ैद अलहब पुत्र हारसह, हदीस 4963 दारुल कुतुब अल्इलमिया)

एक और जगह बयान हुआ है कि हज़रत ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुहिब कहा जाता था। हज़रत ज़ैद रज़ि के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि लोगों में से सबसे ज़्यादा मेरा महबूब वह है जिस पर अल्लाह ने इनाम किया है अर्थात ज़ैद रज़ि। अल्लाह तआला ने इस्लाम के द्वारा उन पर इनाम किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आज़ादी के द्वारा उन पर इनाम किया।

(अल्इस्तेयाह फ़ी मअरफत अस्सहाब जिल्द 2 पृष्ठ 117 ज़ैद पुत्र हारसह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2010 ई)

जंग मूतह के बारे में विभिन्न तारीख़ की किताबों में जो दर्ज है इस का सार यह है कि जंग मुतह का बदला लेने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बहुत बड़ा लश्कर तैयार फ़रमाया जो सफ़र ग्यारह हिज्री में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तैयार फ़रमाया और लोगों को हुक्म दिया कि रुम के ख़िलाफ़ जंग के लिए तैयार हो जाओ। यद्यपि जंग मूतह के बाद यह जो लश्कर तैयार फ़रमाया था उस का ज़ैद पुत्र हारसह से सीधा सम्बन्ध नहीं है क्योंकि वह पहले ही शहीद हो चुके थे लेकिन फ़ौज की तैयारी और वजह में हज़रत ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि का ज़िक्र भी आता है इसलिए यह हिस्सा भी बयान कर देता हूँ। कुछ हिस्से का हज़रत उसामह रज़ि के ज़िक्र में भी शायद कुछ समय पहले ज़िक्र हो चुका है बहरहाल हज़रत उसामा बदरी सहाबी नहीं थे उस वक़्त बहुत छोटे थे लेकिन पहले क्योंकि मैं उमूमी तौर पर सहाबा का ज़िक्र कर रहा था इस में उनका ज़िक्र हो गया था। बहरहाल यह लश्कर जब तैयार हुआ तो अगले दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसामा पुत्र ज़ैद रज़ि को बुलाया और इस मुहिम की क़ियादत आप के सपुर्द करते हुए फ़रमाया अपने बाप के शहीद होने की जगह की तरफ़ जाओ और मुल्क शाम के लिए रवानगी का इरशाद करते हुए फ़रमाया जब रवाना हो तो तेज़ी के साथ सफ़र करो और उन तक सूचना पहुंचने से पहले वहां पहुंच जाओ। फिर सुबह होते ही अहले उबना अर्थात मुल्क सीरिया में बलक़ा के इलाक़े में मूतह के क़रीब एक स्थान जहां जंग मूतह हुई थी वहां पर हमला करो और बलक़ा, यह मुल्क सीरिया में स्थित एक इलाक़ा है जो दमिशक़ और वादी अलक़रा के मध्य है। इस के बारे में लिखा है कि हज़रत लूत अलैहिस्सालम की नस्ल में से बालक नाम के एक शख़्स ने आबाद किया था। और दारोम के बारे में लिखा है कि मिस्र जाते हुए फ़लस्तीन में ग़ज़ा के स्थान पर एक स्थान है बहरहाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत ज़ैद रज़ि का बदला लेने के लिए इन जगहों को अपने घोड़ों के माध्यम से रौंद डालो। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसामा से और फ़रमाया अपने साथ रास्ता बताने वाले भी लेकर जाओ और वहां की ख़बर को प्राप्त करने के लिए भी आदमी निर्धारित करो जो तुम्हें सही सूरतहाल से आगाह करें। अल्लाह तआला तुम्हें कामयाबी बख़्शे तो जल्द वापस लौट आना। इस मुहिम के वक़्त हज़रत उसामह रज़ि की उम्र सतरह साल से बीस साल के मध्य थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसामह रज़ि के लिए अपने हाथ से एक झंडा बाँधा और हज़रत उसामह रज़ि से कहा कि अल्लाह के नाम के साथ उस की राह में जिहाद करो जो अल्लाह का इन्कार करे इस से जंग करो। हज़रत उसामह रज़ि यह झंडा लेकर निकले और उसे हज़रत बुरैदह रज़ि के सपुर्द किया। यह लश्कर जुरफ़ स्थान पर इकट्ठा होना शुरू हुआ। जुरफ़ भी मदीना से तीन मील के फ़ासले पर एक जगह है। इस लश्कर की संख्या तीन हज़ार बयान की जाती है। इस लश्कर में मुहाजरीन और अंसार में से सब शामिल हुए। उन में हज़रत अबूबकर रज़ि, हज़रत उमर रज़ि, हज़रत अबू बैदा पुत्र अलजराह रज़ि, हज़रत साद पुत्र अबी वक़ास रज़ि जैसे महान सहाबा और बड़े सहाबा भी शामिल थे लेकिन उनके लश्कर के सरदार हज़रत उसामह रज़ि को निर्धारित फ़रमाया जो सतरह अठारह साल की उम्र के थे।

कुछ लोगों ने हज़रत उसामह रज़ि पर एतराज़ किया कि यह लड़का इतनी छोटी उम्र में अव्वलीन मुहाजिरीन पर अमीर बना दिया है। इस पर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सख़्त नाराज़ हुए। आप (स) ने अपने सिर को एक रूमाल से बाँधा हुआ था और आप (स) एक चादर ओढ़े हुए थे। आप (स) मिन्बर पर चढ़े और फ़रमाया कि हे लोगो !यह कैसी बात है जो तुम में से कुछ की तरफ़ से उसामह रज़ि की इमारत के बारे में मुझे पहुंची है। अगर मेरे उसामह रज़ि को अमीर बनाने पर तुम ने एतराज़ किया है तो इस से पहले उस के बाप को मेरे अमीर निर्धारित करने पर भी तुम एतराज़ कर चुके हो। फिर आप (स) फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम वह भी अपने अंदर इमारत के गुण रखता था अर्थात हज़रत ज़ैद पुत्र हारसह रज़ि और इस के बाद उस का बेटा भी अपने अंदर इमारत के गुण रखता है। वह उन लोगों में से था जो मुझे सबसे ज़्यादा महबूब हैं और यह दोनों यक़ीनन हर ख़ैर के हक़दार हैं। फिर आप (स) ने फ़रमाया अत: इस अर्थात उसामा के लिए ख़ैर की नसीहत पकड़ो क्योंकि यह तुम में से बेहतरीन लोगों में से है। यह दस रबी

उल अव्वल हफ़्ता का दिन था अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात से दो दिन पहले की बात है। वह मुसलमान जो हज़रत उसामा के साथ रवाना हो रहे थे वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को विदा कर के जुरुफ़ के स्थान पर लश्कर में शामिल होने के लिए चले जाते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बीमारी बढ़ गई लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ताकीद फ़रमाते थे कि लश्कर उसामा को भिजवाओ। इतवार के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दर्द और ज़्यादा हो गया और हज़रत उसामह रज़ि लश्कर में वापस आए तो आप (स) बेहोशी की हालत में थे। इस रोज़ लोगों ने आप (स) को दवा पिलाई थी। हज़रत उसामह रज़ि ने सिर झुका कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चुम्बन दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बोल नहीं सकते थे लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठाते और हज़रत उसामह रज़ि के सिर पर रख देते थे। हज़रत उसामह रज़ि कहते हैं कि मैंने समझ लिया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे लिए दुआ कर रहे हैं। हज़रत उसामा लश्कर की तरफ़ वापस आ गए। सोमवार को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को स्वस्थ हो गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसामह रज़ि से फ़रमाया कि अल्लाह तआला की बरकत से रवाना हो जाओ। हज़रत उसामह रज़ि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रुख़स्त हो कर रवाना हुए और लोगों को चलने का हुक्म दिया। इसी समय में उनकी माता हज़रत उम्मे एमन रज़ि की तरफ़ से एक शख़्स यह पैग़ाम लेकर आया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आख़िरी वक़्त दिखाई दे रहा है, तबीयत बहुत ज़्यादा ख़राब हो चुकी है। यह दुख वाली ख़बर सुनते ही हज़रत उसामह रज़ि हज़रत उमर रज़ि और हज़रत अबूउबैदह रज़ि के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुए। वापस आ गए तो देखा कि आप (स) पर मृत्यु की हालत थी।

12 रबी उल-अव्वल को सौमवार के दिन सूरज ढलने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वफ़ात पाई जिसकी वजह से मुसलमानों का लश्कर जुरुफ़ स्थान से मदीना वापस आ गया और हज़रत बुरैदह रज़ि ने हज़रत उसामा का झंडा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरवाज़े पर गाड़ दिया। जब हज़रत अबू बकर रज़ि की बैअत कर ली गई तो हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत बुरैदह रज़ि को हुक्म दिया कि झंडा लेकर उसामह रज़ि के घर जाओ कि वह अपने मक़सद के लिए रवाना हो। यह लश्कर जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तैयार किया था अब इस को लेकर जाओ। हज़रत बुरैदह रज़ि झंडे को लेकर लश्कर की पहली जगह पर ले गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद सारे अरब में चाहे कोई आम आदमी था या ख़ास तलगभग हर क़बीले में फ़ित्ना इर्तिदाद फैल चुका था और उन में नफ़ाक़ ज़ाहिर हो गया था। इस वक़्त यहूदियों तथा इसाइयों ने अपनी आँखें फैलाईं और बड़े ख़ुश थे कि अब देखें क्या होता है और बदले लेने की तैयारियां भी कर रहे थे और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात और मुसलमानों की कमी संख्या के कारण इन मुसलमानों की हालत एक तूफ़ानी रात में बकरे के जैसी थी, बहुत मुश्किल हालत में थे। बड़े बड़े सहाबा ने हज़रत अबू बकर रज़ि से निवेदन किया कि हालात की नज़ाकत के सम्मुख फ़िलहाल लश्कर उसामह रज़ि की रवानगी लेट कर दें, ज़रा लेट कर दें, कुछ समय के बाद चले जाएं तो हज़रत अबू बकर रज़ि ना माने और फ़रमाया कि अगर दरिंदे मुझे घसीटते फिरें तो भी मैं इस लश्कर को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैसला के अनुसार भिजवा कर रहूँगा और मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जारी किया गया फ़ैसला लागू कर के रहूँगा। हाँ अगर बस्तियों में मेरे सिवा कोई भी ना रहे तो भी मैं इस फ़ैसले को लागू करूँगा। बहरहाल आपने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म को उसी स्थित में क़ायम रखा और लागू फ़रमाया और जो सहाबा हज़रत उसामा के लश्कर में शामिल थे उन्हें वापस जुरुफ़ जा कर लश्कर में शामिल होने का इरशाद फ़रमाया। हज़रत अबू बकर रज़ि ने फ़रमाया कि हर वह शख़्स जो पहले उसामा के लश्कर में शामिल था और उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस में शामिल होने का इरशाद फ़रमाया था वह हरगिज़ पीछे ना रहे और ना ही मैं उसे पीछे रहने की इजाज़त दूँगा। उसे चाहे पैदल भी जाना पड़े वह ज़रूर साथ जाएगा। बहरहाल लश्कर एक बार फिर तैयार हो गया। कुछ सहाबा ने हालात की नज़ाकत के कारण फिर मश्वरा दिया कि फ़िलहाल इस लश्कर को रोक लिया जाए। एक रिवायत के अनुसार हज़रत उसामह रज़ि ने हज़रत उमर रज़ि से कहा कि आप हज़रत अबू बकर रज़ि के पास जा कर उनसे कहें कि वह लश्कर की रवानगी का हुक्म स्थगित कर दें ताकि हम मुर्तदीन के ख़िलाफ़ मुकाबला करें और ख़लीफ़ा रसूल और हर्म रसूल और मुसलमानों को मुशरकीन के हमले से सुरक्षित रखें। इस के इलावा कुछ अन्सार सहाबा ने हज़रत उमर रज़ि से कहा कि ख़लीफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबूबकर अगर लश्कर को रवाना करने पर ही तय्यार हैं अगर यही इसरार है तो उनसे यह दरख़ास्त करें कि वह किसी ऐसे शख़्स को लश्कर का सरदार निर्धारित कर दें जो उम्र में उसामह रज़ि से बड़ा हो। लोगों की यह राय लेकर हज़रत उमर रज़ि हज़रत अबू बकर रज़ि के पास हाज़िर हुए तो हज़रत अबू बकर रज़ि ने फिर उसी मज़बूत इरादा के साथ इरशाद फ़रमाया कि अगर जन्गल के दरिंदे मदीना में दाख़िल हो कर मुझे उठा ले जाएं तो भी वह काम करने से रुकूंगा नहीं जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने करने का हुक्म दिया है। इस के बाद हज़रत उमर रज़ि ने कुछ अन्सार का पैग़ाम दिया तो वह सुनते ही हज़रत अबू बकर रज़ि ने जलाल से फ़रमाया कि उसे अर्थात उसामह रज़ि को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अमीर निर्धारित फ़रमाया है और तुम मुझसे कहते हो कि मैं उसे इस ओहदे हटा दूं। हज़रत अबू बकर रज़ि का आखरी फ़ैसला सुनने और आप के फौलादी इरादा को देखने के बाद हज़रत उमर रज़ि लश्कर वालों के पास पहुंचे। जब लोगों ने पूछा कि क्या हुआ तो हज़रत उमर रज़ि ने बड़े ग़ुस्सा से कहा कि मेरे पास से फ़ौरन चले जाओ। केवल तुम लोगों की वजह से मुझे आज ख़लीफ़ा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से डाँट खानी पड़ी है।

जब हज़रत अबू बकर रज़ि के हुक्म के मुताबिक़ उसामा के लश्कर जुरुफ़ के स्थान पर इकट्ठा हो गया तो हज़रत अबू बकर रज़ि ख़ुद वहां तशरीफ़ ले गए और आप ने वहां जा कर लश्कर का जायज़ा लिया और इस को तर्तीब दी और रवानगी के वक़्त का मन्ज़र भी बहुत ही हैरत वाला था। इस वक़्त हज़रत उसामह रज़ि सवार थे जबकि हज़रत अबूबकर अल्लाह के रसूल के ख़लीफा पैदल चल रहे थे। हज़रत उसामह रज़ि ने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा! या तो आप सवार हो जाएं या फिर मैं भी नीचे उतरता हूँ। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ि ने फ़रमाया। अल्लाह की क़सम ना ही तुम नीचे उतरोगे और ना ही में सवार हूँगा और मुझे क्या है कि मैं अपने दोनों पैर अल्लाह की राह में एक घड़ी के लिए गन्दे ना करूँ क्योंकि ग़ाज़ी जब क़दम उठाता है तो उस के लिए उस के बदला में सात सौ नेकियां लिखी जाती हैं और इस को सात सौ दर्जे बुलंदी दी जाती है और इस की सात सौ बुराईयां ख़त्म की जाती हैं।

हज़रत अबू बकर रज़ि को मदीना में कई कामों के लिए हज़रत उमर रज़ि की ज़रूरत थी। हज़रत अबू बकर रज़ि ने उन्हें ख़ुद रोकने की बजाय हज़रत उसामह रज़ि से इजाज़त चाही कि वह अगर बेहतर समझें तो हज़रत उमर रज़ि को मदीना में हज़रत अबू बकर रज़ि के पास रहने दें। हज़रत उसामह रज़ि ने वक्त के ख़लीफ़ा की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए हज़रत उमर रज़ि को मदीना में रहने की इजाज़त दे दी। इस घटना के बाद हज़रत उमर रज़ि जब भी हज़रत उसामह रज़ि से मिलते तो आप को मुख़ातब हो कर कहा करते थे। اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا الْأَمِيْرُ कि हे अमीर तुम पर सलामती हो। हज़रत उसामह रज़ि उस के जवाब में غَفَرَ اللهُ لَكَ يَا أَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْن कहते थे। कि हे अमीरुल मोमनीन! अल्लाह तआला आप से मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए।

बहरहाल हज़रत अबूबकर रज़ि ने आख़िर में लश्कर को इन शब्दों में नसीहत फ़रमाई कि तुम ख़यानत न करना, ख़यानत ना करना। तुम अहद न तोड़ना। चोरी ना करना और मुस्ला ना करना, जंग में विरोधियों के जो लोग मर जाएं क़तल हो जाएं उनकी शक्लें ना बिगाड़ना। छोटी उम्र के बच्चे और बूढ़े और औरत को क़तल ना करना। खजूर के दरख़्त को ना काटना और ना ही जलाना। किसी भेड़, गाय और ऊंट को खाने के सिवा ज़बह ना करना। फिर आप ने फ़रमाया कि तुम ज़रूर ऐसी क़ौम के पास से गुज़रोगे जिन्हों ने अपने आपको गिरजाओं में इबादत के लिए वक़्फ़ कर रखा होगा तो उन्हें छोड़ देना। तुम्हें ऐसे लोग भी मिलेंगे जो अपने बर्तनों में विभिन्न प्रकार के खाने लाएँगे। तुम अगर उनमें से खाओ तो बिस्मिल्लाह पढ़ कर खाओ और तुम ज़रूर ऐसी क़ौम के पास पहुँचोगे जिन्हों ने मध्य से अपने सिरों को मुंडवाया होगा लेकिन चारों तरफ़ से बालों को लटों की तरह छोड़ा होगा अत: तुम ऐसे लोगों को तलवार का हल्का सा ज़ख़्म लगाना और अल्लाह के नाम के साथ अपनी रक्षा करना। अल्लाह तआला तुम्हें तानों और ताऊन की बीमारी से महफ़ूज़ रखे। और फिर हज़रत अबूबकर रज़ि ने हज़रत उसामह रज़ि से कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो तुम्हें करने का हुक्म दिया है वह सब कुछ करना।

इन सारी बातों से यह भी ज़ाहिर होता है कि जहां हज़रत अबूबकर ने हज़रत उसामह रज़ि को इस्लामी आदाब जंग की ताकीद फ़रमाई, किसी किस्म का कोई ज़ुल्म नहीं होना चाहिए वहां यह भी वाज़िह होता है कि आप रज़ि को इस लश्कर की फ़तह पर भी यक़ीन था इसलिए आप रज़ि ने फ़रमाया कि तुम्हें कामयाबियां मिलेंगी। बहरहाल 1 रबी अल-आख़िर 11 हिज्री को हज़रत उसामह रज़ि रवाना हुए। हज़रत उसामा अपने लश्कर के साथ मदीना से रवाना हो कर मंज़िलों पर मंज़िलें तय करते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वसीयत अनुसार सीरिया के इलाक़ा उबनाई पहुंचे और सुबह होते ही आप ने बस्ती के चारों तराफ़ से उन पर हमला किया। इस लड़ाई में जो शिआर था, नारा था يَا مَنْصُوْرُ اَمِتْ अर्थात ए मदद प्राप्त! मार डाल। इस लड़ाई में जिसने भी मुसलमान मुजाहिदों के साथ मुक़ाबला क्या वह क़त्ल हुआ और बहुत से क़ैदी भी बनाए गए। इसी तरह बहुत सा माल ग़नीमत भी हासिल हुआ जिसमें से उन्होंने पांचवा हिस्सा रखकर बाक़ी लश्कर में बांट कर दिया, पांचवां हिस्सा रख के बाक़ी तक़सीम कर दिया और सवार का हिस्सा पैदल वाले से दोगुना था। इस युद्ध से फ़ारिग़ हो कर लश्कर ने एक दिन उसी जगह निवास किया और अगले रोज़ मदीना के लिए वापसी का सफ़र धारण किया।

हज़रत उसामह रज़ि ने मदीना की तरफ़ एक ख़ुशख़बरी देने वाला रवाना किया। इस युद्ध में मुसलमानों का कोई आदमी भी शहीद नहीं हुआ। जब यह कामयाब और फ़ातेह लश्कर मदीना पहुंचा तो हज़रत अबू बकर रज़ि ने मुहाजरीन तथा अंसार के साथ मदीना

से बाहर निकल कर उनका भरपूर स्वागत किया। हज़रत बुरैदह रज़ि झंडा लहराते हुए लश्कर के आगे आगे चल रहे थे। मदीना में दाख़िल हो कर लश्कर मस्जिद नबवी तक गया। हज़रत उसामह रज़ि ने मस्जिद में दो नफ़ल अदा किए और अपने घर चले गए। विभिन्न रिवायतों के अनुसार यह लश्कर चालीस से लेकर सत्तर रोज़ तक बाहर रहने के बाद मदीना वापस पहुंचा था। उसामह रज़ि के लश्कर का भिजवाया जाना मुसलमानों के लिए बहुत लाभ का कारण बना क्योंकि अरब वाले यह कहने लगे कि अगर मुसलमानों में ताक़त और क़ुव्वत ना होती तो वह हरगिज़ यह लश्कर रवाना ना करते। तो इस तरह जो कुफ़्फ़ार थे वह बहुत सारी ऐसी बातों से रुक गए जो वह मुसलमानों के ख़िलाफ़ करना चाहते थे।

(उद्धरित अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 2 पृष्ठ 145 से 147 सरिया उसामा पुत्र ज़ैद प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)(उद्धरित अस्सीरतुल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 291 से 294 .. दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)(उद्धरित अल्कामिल फ़ी तारीख़ जिल्द 2 पृष्ठ 199-200 11 हिज्री ज़िक्र इन्फ़ाज़ जैश उसामा पुत्र ज़ैद प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2006 ई)(मोअज्जम अल्बुलादान जिल्द 1 पृष्ठ 579 अलबल्क़ा जिल्द 2 पृष्ठ 483 अद्दारम जिल्द 2 पृष्ठ 149 अल्जुरफ़ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और इस के समर्थन से हज़रत उसामह रज़ि ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन को एक एक शब्द पूरा कर दिखाया और इंतिज़ाम तथा इंसिराम के लिहाज़ से भी और युद्ध में इंतिहाई कामयाबी और सफलता के लिहाज़ से भी इस मुहिम को उच्छ साबित कर दिया। आप (स) ने फ़रमाया था कि यह बेहतरीन सरदार है। ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और वक्त के ख़लीफ़ा की दुआओं की क़बूलीयत और बरकत ने साबित कर दिया कि हज़रत उसामह रज़ि भी अपने शहीद वालिद हज़रत ज़ैद रज़ि की तरह ना सिर्फ यह कि सरदारी के योग्य थे बल्कि उन गुणों और विशेषताओं में एक बुलंद स्थान रखते थे और यह वक्त के ख़लीफ़ा का मज़बूत इरादा तथा हिम्मत और बुलंद हौसला ही था जिसने कई बार अंदरूनी और बैरूनी ख़तरों और आरोपों के बावजूद इस लश्कर को रवाना किया और फिर ख़ुदा ने कामयाबी और सफलता से नवाज़ कर मुसलमानों को पहली शिक्षा यह सिखा दी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद अब सारी बरकतें सिर्फ़ इताअत ख़िलाफ़त में ही हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी सिर्रुख़िलफा में इस घटना का ज़िक्र किया हुआ है।

(उद्धरित सिर्रुख़िलफा रुहानी ख़ज़ायन जिल्द 8 पृष्ठ 394 हाशिया)

बहरहाल अल्लाह तआला हज़रत ज़ैद पुत्र हारसा रज़ि और फिर उनके बेटे हज़रत उसामा पुत्र ज़ैद रज़ि पर, जो हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्यारे और महबूब थे। हज़ारों हज़ार रहमतें और बरकतें नाज़िल फ़रमाए।

नमाज़ जुम्अ: के बाद में दो जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। पहला जनाज़ा है आदरणीय सिद्दीक़ आदम दुमबया (Dumbia) साहिब का जो एवरीकोस्ट के मुबल्लिग़ थे, एक समय से बीमार चले आ रहे थे। पिछला साल परस्टेट (prostate) का ऑप्रेशन भी हुआ। इसी तरह गुर्दों का भी मस्ला था, डाइलीसज़ (dialysis) भी होते रहते थे। काफ़ी अर्से से ईलाज के सिलसिले में आबीजान (Abidjan) ठहरे हुए थे। पिछले दिनों अचानक ज़्यादा तबीयत ख़राब होने पर मिल्ट्री हस्पताल में ले जाया गया जहां 14 जून को आपकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाह व इन्न लिल्लाह इलैहि राजेऊन।

सिद्दीक़ आदम साहिब 1950 ई में एवरीकोस्ट के एक गांव लोसनगे में पैदा हुए थे। 1977 ई के लगभग अहमदियत में शामिल हुए। उनके पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी के इलावा सात बेटियां और दो बेटे हैं। फिर 1981 ई में ज़िंदगी वक़्फ़ करने के बाद इल्म हासिल करने के लिए आपने अपने दो साथियों के साथ पाकिस्तान के लिए पैदल सफ़र का आरम्भ किया। लगभग एक साल तक सफ़र के कष्ट बर्दाश्त करने के बाद 1982 ई में रब्वह पहुंचे और जामिया अहमदिया में शिक्षा का आग़ाज़ किया। जामिया अहमदिया में तालीम हासिल करने के बाद 1985-86 ई में आपकी एवरीकोस्ट वापसी हुई और फिर वफ़ात तक निरन्तर तीस साल से अधिक समय मग़रिबी अफ़्रीक़ा के विभिन्न देशों में बतौर मुबल्लिग़ सेवा की तौफ़ीक़ पाई।

उनकी पाकिस्तान के सफ़र की तफ़सील कुछ इस तरह है कहते हैं कि 1977 ई में जब ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह अल्लाह तआला ने घाना का दौरा किया तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह की ज़यारत ने उनकी रूह में एक ऐसी तबदीली पैदा की कि बिल्कुल काया पलट दी। एवरीकोस्ट पहुंच कर पासपोर्ट बनवाया और फिर कहते हैं ख़लीफ़तुल मसीह की ज़यारत के लिए अपने एक दोस्त के साथ पाकिस्तान के सफ़र के लिए कोशिश करनी शुरू कर दी। इसी दौरान माली के एक नौजवान उम्र मआज़ साहिब जो वहां आजकल हमारे मुबल्लिग़ हैं ,मस्जिद आबी जान में आए और अपनी एक रोया के आधार पर अहमदियत क़बूल की और फिर कुछ दिनों बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शहर को देखने और ख़लीफ़तुल मसीह की मुलाक़ात की बहुत इच्छा का इज़हार किया। बहरहाल इस तरह इन तीनों ने पाकिस्तान के सफ़र का फ़ैसला किया। अत: 20 अगस्त 1981 ई को उन्होंने अपने सफ़र का आरम्भ किया। एवरीकोस्ट से रवाना हो कर सफ़र की पहली मंज़िल पर घाना पहुंचे। वहां वहाब आदम साहिब अमीर मिशनरी इंचार्ज से मुलाक़ात की। दुआओं के बाद यह टोगो से बेनिन को पार करते हुए नाईजीरिया के शहर लेगोस (Lagos) पहुंचे। वहां मिशन में क़ियाम के बाद कैमरोन के लिए रवाना हुए। मिशनरी इंचार्ज नाईजेरिया ने भी अपनी दुआओं के साथ उनको विदा क्या, कुछ माली मदद भी की। फिर कैमरोन से होते हुए चाड में दाख़िल हुए। चाड में वहां उनको क़ैद के कष्ट बर्दाश्त करना पड़ें लेकिन बहरहाल सब्र और हौसले के साथ अपना सफ़र जारी रखा। चाड से आगे सफ़र जारी रखना लगभग नामुमकिन था लेकिन ख़ुदा तआला ने एक ख़्वाब के माध्यम उनकी रहनुमाई फ़रमाई कि फ़ौज में शामिल हो जाएं। अत: उन्होंने लीबिया की फ़ौज में शामिल होने की कोशिश की और इस मौक़ा पर ख़ुदा तआला ने ग़ैबी सहायता की और नामुमकिन को मुम्किन बनाया। एक वक़्त ऐसा भी आया कि लीबिया की गर्वनमैंट ने इन सबको देश से निकाल दिया लेकिन समस्त कारणों को पैदा करने वाला ख़ुदा ने ऐसे हालात पैदा कर दिए कि ना सिर्फ यह कि देश निकाला होने का हुक्मनामा कैंसल हो गया बल्कि लीबिया की फ़ौज में बतौर रज़ाकार शामिल हो कर लेबनान में लगभग आठ महीना सरहद की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी भी अंजाम दी। जब जंग ख़त्म हुई तो उन्होंने अपने इंचार्ज से पाकिस्तान जाने की इच्छा का इज़हार किया। तो उसने कहा कि कुछ समय अन्य हमारे पास ठहर लो उस के बाद इंटरनेशनल पासपोर्ट बनवा कर आपको अमरीका भिजवा दूँगा। आप पाकिस्तान जाने के बजाय अमरीका चले जाएं तो उन लोगों ने शुक्रिया के साथ यह पेशकश क़बूल करने से क्षमा मांग ली और निवेदन किया कि हम तालीम की उद्देश्य से पाकिस्तान जाना चाहते हैं। पाकिस्तानी सिफ़ारत ख़ाने ने वीज़ा देने से इन्कार कर दिया लेकिन ख़ुदा तआला ने उनके इंचार्ज के माध्यम से कराची तक के एयर टिकट मुहय्या कर दिए जो उनका फ़ौज का इंचार्ज था और यूं 27 नवंबर 1982 ई को यह पाकिस्तान जाने के लिए एयरपोर्ट पहुंचे। अल्लाह तआला की सहायता का नज़ारा फिर से देखने को मिला। इंचार्ज ने उनका परिचय एक पुलिस सहायक से कराया कि यह इस्लामी तालीम के लिए पाकिस्तान जा रहे हैं। उनकी हर मुम्किन मदद की दरख़ास्त है। अत: इस पुलिस अहलकार ने उनकी बेहद मदद की। रात जहाज़ दमिशक़ से रवाना हो कर सुबह कराची एयरपोर्ट पर पहुंच गया। अब यह कराची तो पहुंच गए लेकिन वीज़ा की परेशानी थी। दुआओं के बाद फिर एयरपोर्ट पुलिस के सामने पासपोर्ट रख दिए। सवाल जवाब हुए। तालीम के लिए पाकिस्तान आना अपना मक़सद बयान किया तो पुलिस अहलकार ने मुहर लगा कर पासपोर्ट पर दस्तख़त कर दिए। फिर पूछा कि कहाँ जाना है उन्होंने कहा कि रब्वह जाना है तो उसने कहा तो क्या तुम कादयानी हो? पहले उस के कि अन्य कोई नकारात्क विचार उस का इरादा बदल देते और वह मुहर को कैंसल कर देता उस के एक साथी ने कहा कि कादयानी हैं तो क्या हुआ तालीम के लिए आए हैं जाने दो। बहरहाल कहते हैं कि रब्वह पहुंचने का और ख़लीफ़तुल मसीह से मिलने का इतना उनको शौक़ था, बड़े जज़बात से मग़लूब थे कि उनको यह ख़्याल ही नहीं गया कि यहां कराची में पता कर लें कि जमाअत है तो कहाँ है और कोई मैंबर है तो इस से मिल लें ताकि आसानियां पैदा हो जाएं। बजाय जमात से सम्पर्क करने के सीधे रेलवे स्टेशन पहुंचे और वहां से रब्वा के लिए रेल का टिकट मांगा। वहां भी रेलवे में टिकट देने वाला कोई लालची शख़्स और द्वेष वाला था। उसने कहा अहमदियों को हम टिकट नहीं देते और दो घंटे की बड़ी बेहस के बाद आख़िर दोगुना किराया लेकर टिकट देने पर राज़ी हो गया लेकिन टिकट भी फिर ऐसी गाड़ी का दिया जो बहुत सुस्त गाड़ी थी और चौबीस घंटे उन को लगे कराची से रब्वा पहुंचते हुए। बहरहाल ख़लीफ़तुल मसीह सालिस की ज़यारत का उनको शौक़ था तो बड़े कठिन सफ़र के बाद रब्वा पहुंचे। रब्वा पहुंच कर दारुल ज़ियाफत में गए। बहरहाल उनको नहीं पता था कि क्या हो चुका है लोगों की ज़बान पर बार बार ख़लीफ़तुल मसीह राबे के शब्द सुनकर उनको तशवीश हुई और फिर सम्पर्क करने पर इल्म हुआ कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस की तो वफ़ात हो चुकी है और अब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबा ख़िलाफ़त के स्थान पर हैं। बहरहाल फिर 1982 ई में उनकी मुलाक़ात हुई। जामिया अहमदिया में दाख़िला लिया। जामिया से तालीम मुकम्मल

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

कर के वापस एवरीकोस्ट रवाना हुए और फिर वहां से जमाअत के द्वारा विभिन्न देशों में उनकी पोस्टिंग होती रही । 1987 ई से 1991 ई तक एवरीकोस्ट में। 1991 ई से 1992 ई तक नाईजर में। 1992 ई से 1994 ई तक बेनिन में। 1994 ई से 1996 ई तक टोगो में और 1996 ई से वफ़ात तक फिर एवरीकोस्ट में रहे।

बासित साहिब मुबल्लिग़ एवरीकोस्ट लिखते हैं कि सिद्दीक़ आदम साहिब ख़िलाफ़त के सच्चे आशिक़ और सिलसिला के मुख़लिस ख़ादिम थे। कहते हैं लंबा समय उनके साथ काम करने का मौक़ा मिला। उन्होंने देखा कि दुआ करने वाले, तहज्जुद की नमाज़ अदा करने वाले, रोया वाला थे। ख़्वाबों के अर्थ बताने का भी बड़ा फन था और अक्सर अपने जानने वालों को उनकी ख़्वाबों के अर्थ वर्णन किया करते थे। नियमित अपनी मासिक रिपोर्ट यहां मर्कज़ में भी भिजवाते और मुझे भी ख़त लिखते थे, दुआ के ख़ुतूत भी लिखते थे और उर्दू ज़बान में ख़ुतूत लिखा करते थे यह उनकी आदत थी। बड़े नेक और वक़्त की पाबंदी का एहसास करने वाले थे। ज़िम्मेदारी का एहसास था। हमेशा वक़्त की पाबंदी करते और जो काम भी सपुर्द किया जाता वक़्त के अंदर ख़त्म करने की कोशिश करते। लंबे सफ़रों के दौरों से कभी नहीं घबराते थे। तब्लीग़ बड़े दिल को भलाने वाले अंदाज़ में करते थे। फ़ित्ना दज्जाल और इस के ज़हूर और निशानों और मौजूदा दौर की ख़राबियों का ज़िक्र कर के इमाम महदी के ज़हूर का वर्णन करते। सुनने वाले आपके बयान के अंदाज़ की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते थे और अक्सर समय उन्होंने लिखा है कि तब्लीग़ में कामयाबी होती थी। नॉर्थ रीजन में उनके तब्लीग़ी दौरों के नतीजा में अल्लाह तआला ने हज़ारों फल प्रदान फ़रमाए। अपने पाकिस्तान के सफ़र का और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों का यह बड़ा ज़िक्र किया करते थे, और अहमदियत की सदाक़त के तौर पर यह निशान पेश किया करते थे कि किस तरह दूर दराज़ देशों में भी अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सुलतान नसीर प्रदान फ़रमाए हैं जो इस राह में क़ुर्बानी पेश करने के लिए तैयार रहते हैं और फिर अल्लाह तआला उन्हें नवाज़ता और अपने प्यारे महदी की सहायता और मदद फ़रमाता है। मरहूम का अंदाज़ बयान जोला ज़बान जो वहां बोली जाती है इन बोलने वालों के लिए ख़ास आकर्षण का बाइस था। रेडियो के द्वारा लाईव प्रोग्राम भी पेश करते थे और बड़े उच्च उनके प्रोग्राम होते थे, बड़े पसंद किए जाते थे।

अल्लाह तआला उन से क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके स्तर बुलंद फ़रमाए, उनकी औलाद को भी सब्र और हौसला भी प्रदान फ़रमाए और उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा जो है वह मियां ग़ुलाम मुस्तफ़ा साहिब, मेरिक ज़िला ओकाड़ा का है जो 24 जून को 83 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन

मरहूम पैदाइशी अहमदी थे और इबादत का ख़ास शौक़ था। जमाअत के साथ नमाज़ें अदा करने वाले, तहज्जुद नमाज़ पढ़ने वाले थे। अपनी मस्जिद में फ़ज्र की अज़ान ख़ुद दिया करते थे। सारी फ़ैमिली को नमाज़ फ़ज्र पर उठाते और आख़िरी वक़्त तक अल्लाह तआला ने उनको तौफ़ीक़ दी कि रमज़ान के रोज़े रखते रहे। तब्लीग़ का बेहद शौक़ था। हर मिलने वाले को किसी ना किसी रंग में जमाअत का पैग़ाम पहुंचाते थे। बहुत अधिक मिलनसार, बहुत नेक और मुख़लिस इन्सान थे। ख़िलाफ़त से अक़ीदत का ताल्लुक़ था। ख़ुतबात जुम्अ: बाक़ायदगी से सुनते। बच्चों को भी इस की ताकीद करते। मर्कज़ी मेहमानों की सेवा और माली क़ुर्बानी में हमेशा आगे रहते और उनको थर्पारकर में प्यासों के लिए पानी का कुँआं लगवाने की भी तौफ़ीक़ मिली। वसीयत का हिसाब अपनी ज़िंदगी में मुकम्मल किया हुआ था। कुछ साल पहले अपना मकान भी जमाअत को पेश करने की उनको तौफ़ीक़ मिली और ख़ुद मस्जिद में एक छोटे से कमरे में रहने लगे। और यह मकान जो है मुरब्बी हाऊस के तौर पर इस्तिमाल हो रहा है। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पाँच बेटियां और तीन बेटे यादगार छोड़े हैं। आप ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब मुरब्बी सिलसिला बरोंडी के पिता थे जो इस वक़्त कर्म क्षेत्र में मसरूफ़ हैं और पिता के जनाज़ा में शरीक नहीं हो सके और इस से पहले अपनी माता की वफ़ात पर भी नहीं जा सके थे। बड़े सब्र और हौसले से ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब ने इन दोनों सदमों को बर्दाश्त किया है। अल्लाह तआला उनका सब्र और हौसला बढ़ाए और वफ़ा के साथ अपना वक़्फ़ निभाने की तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाता रहे।

आप के एक पोते क़ासिम मुस्तफ़ा साहिब और एक नवासे मुहम्मद सफ़ीरुद्दीन साहिब भी मुरब्बी हैं। इसी तरह एक पोते बिलाल अहमद वाक़िफ़ नौ हैं और इस साल डाक्टर बन कर कर्म क्षेत्र में जा रहे हैं। अल्लाह तआला उनसे रहम और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए, दर्जात बुलंद फ़रमाए। ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब मुरब्बी जो परदेस में अल्लाह तआला का पैग़ाम पहुंचाने में मसरूफ़ हैं और इस वजह से जैसा कि मैंने कहा जनाज़ा में शामिल नहीं हो सके उन्हीं सब्र और हौसले से सदमा बर्दाश्त करने की तौफ़ीक़ दे। जुम्अ: के बाद इंशा अल्लाह दोनों का जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 19 जुलाई 2019 ई पृष्ठ 5 से10

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

है। मैं अन्य पुलिस के लोगों के साथ यहां इसलिए आया हूँ कि मैं अपनी तरफ़ से भाईचारा का प्रकट करूँ कि हम आप लोगों के साथ हैं और इस्लाम और यहां के स्थानीय लोगों के मध्य पुल का काम कर रहे हैं। मैं यह देखना चाहता हूं कि यह मस्जिद यहां रहने वालों के लिए क्या ऑफ़र करती है और इस मैं पुलिस अपना क्या सकारात्मक भूमिका अदा कर सकती है। हम अन्य कम्यूनिटीज़ के साथ मिलकर काम कर रहे हैं और इसी तरह मस्जिद के साथ भी काम करेंगे। इस मस्जिद के लिए जब भी हमें बुलाया गया है हम ने भरपूर सहयोग किया है। यहां की जमाअत की इंतिज़ामीया बहुत योग्य है, हमें तो कुछ भी नहीं करना पड़ा। स्थानीय लोगों से सम्पर्कों इत्यादि में यहां की जमाअत ने बहुत अहम भूमिका अदा की है।

*एक औरत ने अपने विचार का प्रकट करते हुए कहा: मैंने हुज़ूर अनवर को बहुत ही विनम्र मिज़ाज वाला पाया है। आपका बोलने का अंदाज़ बहुत नर्म है। प्रत्येक से मिलने में आप बहुत मेहरबान हैं। आम तौर पर यह देखा गया है कि जो लोग ऐसे उच्च मुक़ाम पर पहुंच जाते हैं तो उनमें एक दिखावा आ जाता है। हुज़ूर अनवर की ज़ात इस बिलकुल पाक है। आपकी ज़ात में बहुत विनम्रता पाई जाती है।

*एक अफ्रीकन अमरीकन नव मुस्लिम अब्दुल अज़ीज़ ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा :यहां मस्जिद की बहुत ज़रूरत थी। यह बहुत अच्छा सैंटर बन गया है। कहा जाता है कि माहौल को बेहतर करने के लिए दस साल लगते हैं। मैंने दो साल में समाज बेहतर होता देखा है। जिससे साबित होता है कि अगर लगन हो तो इकट्ठे मिलकर यह काम किया जा सकता है। हुज़ूर अनवर ने जो फ़रमाया है यही वक़्त की ज़रूरत है। यह एक हैरत-अंगेज़ पैग़ाम है। आपकी हर बात दिल को लगती है।

*एक अफ्रीकन अमरीकन औरत ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा(यह अपने चर्च की ट्रस्टी भी हैं) यहां पर हम अन्य मुसलमान तन्ज़ीमों से भी सम्पर्क करते हैं लेकिन सम्प्रकों में अहमदियों से बढ़कर कोई नहीं। यह ख़ुद आगे बढ़कर सम्पर्क करते हैं और सम्बन्ध सुदृढ़ करते हैं। यह हमें अपने प्रोग्रामों में दावत देते हैं ताकि हम ज़्यादा से ज़्यादा इस्लाम के बारे में सीख सकें। मैं एक समय से अहमदिया जमाअत से सम्पर्क में हूँ। यह शानदार इमारत इस जमाअत में एक बहुत अच्छा इज़ाफ़ा है। यह एक ऐसी जगह है जहां प्रत्येक को बुलाया गया है, प्रत्येक इस मस्जिद में आ सकता है। आप लोगों का माटो मुहब्बत सब के लिए , नफ़रत किसी से नहीं बहुत शानदार है। यह बहुत गहरा सबक़ है। यह हमारे नौजवानों को सिखाता है कि आपसी मुहब्बत कितनी ज़रूरी है। हमारे समाज में यह मस्जिद एक बहुत हसीन इज़ाफ़ा है।

*एक अफ्रीकन अमरीकन औरत हबीबा मुस्लिमा साहिबा ने कहा: इस इलाक़ा में मस्जिद का इज़ाफ़ा बहुत ही अच्छा क़दम है। इस से हमें इकट्ठे होने का एक मुक़ाम मिल गया है। ऐसी इमारतें तो बहुत होती हैं लेकिन असल बात यह है कि क्या आप प्रत्येक को कम्यूनिटी सैंटर में खुले दिल से क़बूल करते हैं। यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि यहां प्रत्येक को खुले दिल से ख़ुश-आमदीद कहा गया है। यही असल इस्लाम है और यही अहमदियों की नुमायां विशेषता है। हुज़ूर अनवर की तक़रीर बहुत अच्छी थी। इस से बहुत कुछ सीखने को मिला। उम्मीद है कि हम उसे अपनी ज़िन्दगियों का हिस्सा भी बनाएंगे। हुज़ूर अनवर की व्यक्तित्व से विनम्रता झलकती है। अगर हुज़ूर अनवर के उपदेशों पर अनुकरण करें तो हम यक़ीनन सीधे मार्ग पर हैं।

*एक मुस्लिम औरत हानिया और उनकी माता भी इस प्रोग्राम में शामिल हुईं। कहती हैं कि हुज़ूर अनवर को देखकर बहुत ख़ुशी हुई। एक दूसरे से मिलकर बहुत सी अच्छी बातें सीखने को मिलती हैं। मस्जिद की बुनियाद बहुत ही अच्छा क़दाम है। जो पैग़ाम आप लोगों ने दिया है इस के द्वारा से इस्लाम के ख़िलाफ़ फैलाई जाने वाली ग़लत-फ़हमियों को दूर किया जाएगा। बहुत ख़ुशी होती है कि मुसलमानों का एक और सैंटर बन गया है। लोगों में इस्लाम के ख़िलाफ़ द्वेष पाया जाता है, जो कि सरासर ग़लत है। हुज़ूर अनवर का पैग़ाम बहुत मज़बूत था। मैं उम्मीद करती हूँ कि हुज़ूर अनवर का पैग़ाम ज़्यादा से ज़्यादा फैले और अमरीका के लोग इस्लाम की हक़ीक़त जानें। आप लोगों का बहुत शुक्रिया, यहां आकर बहुत अच्छा लगा।

*एक लोकल कौंसिलर भी इस प्रोग्राम में शामिल हुए। यह अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहते हैं: हुज़ूर अनवर का अमन का पैग़ाम बहुत ही ज़रूरी था। ख़ासकर मौजूदा हालात के परिपेक्षय में यह पैग़ाम और भी ज़्यादा महत्व धारण कर गया है। मेरे लिए यहां आना बहुत सम्मान की बात है। मैंने इस मस्जिद को अपने सामने बुनियाद होते देखा है। यहां इस मस्जिद का स्थापना इस इलाक़ा के

लिए बहुत ही बरकत का कारण है। हुज़ूर अनवर ने जो यह पैग़ाम दिया है कि आप लोग पड़ोसियों की ज़रूरत में उनके कंधे से कंधा मिला कर खड़े होंगे, मेरे ख़्याल में सिर्फ यहां फ़िलाडेल्फ़िया में ही नहीं सारी अमरीका में इस पैग़ाम की ज़रूरत है। हुज़ूर अनवर ने जो यहां के वासियों के लिए नेक इच्छाओं को प्रकट किया है और उम्मीद को प्रकट किया है, मैं यक़ीन रखता हूँ कि यह शहर भाईचारा का शहर है और यह इस पैग़ाम और इस उम्मीद पर पूरा उतरेंगे।

*एक ग़ैर अहमदी इमाम भी इस प्रोग्राम में शामिल थे। यह अपने भावनाओं का प्रकट करते हुए कहते हैं :मेरा अहमदियों से पहला सम्बन्ध जमाअत की तरफ से किए गए कुरआन करीम के अनुवाद की वजह से हुआ था। यह अनुवाद मुझे बहुत अच्छा लगता है। हुज़ूर अनवर का पैग़ाम बहुत ही शानदार था। मैं हुज़ूर अनवर से सौ प्रतिशत इत्तिफ़ाक़ करता हूँ। यही हमारा मिशन और हमारा मक़सद है। हम सब आदम की औलाद हैं और हमें एक दूसरे की ज़िन्दगी का स्तर बढ़ाने के लिए कोशिश करते रहना चाहिए। हमने मिलकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वास्तविक पैग़ाम को फैलाना है।

* एक फ़लस्तीनी मुसलमान औरत भी इस प्रोग्राम में शामिल थीं। यह अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहती हैं: यहां बुलाने का बहुत शुक्रिया। यह बहुत ख़ूबसूरत मस्जिद है। मुझे आज आप लोगों से मिलकर बहुत ख़ुशी हुई है। हुज़ूर अनवर का पैग़ाम बहुत अहम था। मेरा सम्बन्ध फ़लस्तीन के एक छोटे से गांव से है। वे वास्तविक शिक्षाएं जो मैंने बचपन में सीखी हैं, वे आज हुज़ूर अनवर के ख़िताब में देखने को मिली हैं। यही वास्तविक इस्लाम है, जिसका उन्होंने ज़िक्र किया है। हम जिस भी फ़िर्क़ा से सम्बन्ध रखते हों, हमारा फ़र्ज़ है कि अमन के लिए एक साथ हो कर काम करें। हुज़ूर अनवर की अमन के लिए ख़िदमतें बहुत शानदार हैं। पड़ोसियों का ख़्याल रखो, विभिन्न रंगों, फ़िर्क़ों, धर्मों से सम्बन्ध रखने के बावजूद हम एक ख़ुदा को मानने वाले हैं और हमें मानव जाति की सेवा करने के लिए मुत्तहिद होना चाहिए, यह एक शानदार पैग़ाम था। आपने वास्तविक रंग में सारी मुसलमान कम्यूनिटीज़ की नुमाइंदगी की है।

* एक स्कूल की डायरेक्टर औरत भी इस प्रोग्राम में शामिल हुईं। यह कहती हैं कि मेरे लिए यहां आना एक सम्मान की बात है। मैं चार पाँच साल से इस की बुनियाद का इंतिज़ार कर रही थी, अन्त में यह एक बहुत ख़ूबसूरत मस्जिद बन गई है।

*एक मेहमान ने कहा: हमारे समाज के लिए सबसे अहम चीज़ इत्तिहाद है। यही हम लोगों को समझाते रहते हैं कि एक हों। अलग अलग होने में नुक़्सान है। हुज़ूर अनवर के इस पैग़ाम को हमेशा सामने रखना चाहिए और हर वक़त इसी एक पैग़ाम का प्रचार करते रहना चाहिए। सबसे ज़रूरी चीज़ यही है।

*एक औरत टीचर ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: मैं यह कहना चाहती हूँ कि यहां आकर मुझे ऐसा लगा कि जैसे में अपने घर में हूँ। हुज़ूर अनवर का पैग़ाम, अमन का पैग़ाम बहुत शानदार था। यद्यपि कि मैं कैथोलिक हूँ, लेकिन हुज़ूर अनवर के एक एक शब्द से इत्तिफ़ाक़ करती हूँ। मैं यक़ीन से कहती हूँ कि इस्लाम अमन का पैग़ाम देता है। इस्लाम इन्सानियत की सेवा का दर्स देता है। मेरी स्टूडैंट मारिया इर्फ़ान ने मुझे दावत दी है, मैं इस का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ कि मुझे इतने अच्छे प्रोग्राम में बुलाया है। हमें मिलकर समाज की बेहतरी के लिए काम करना है। पड़ोसियों के बारे में से हुज़ूर अनवर का पैग़ाम बहुत ही ज़रूरी है। कई बार यह कहा जाता है कि यह बातें तो मालूम हैं, लेकिन ज़रूरत होती है कि कोई ना कोई ध्यान दिलाए और जब इतना महान व्यक्तित्व ध्यान दिलाए तो एक नई रूह पैदा हो जाती है। मैं आपका बहुत शुक्रिया अदा करती हूँ।

*एक आर्कीटेक्ट Richard ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: मुझे बुलाने का बहुत शुक्रिया। मैं हुज़ूर अनवर के ख़िताब से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आपने जो अमन का पैग़ाम दिया है, यह बहुत ही शानदार है। आजकल के हालात की वजह से इस पैग़ाम की महत्तव और भी ज़्यादा बढ़ जाती है। मेरे लिए यह पैग़ाम और भी ज़्यादा अहम है क्योंकि मेरा सम्बन्ध फ़िलाडेल्फ़िया से ही है। यह देखकर बहुत ख़ुशी हुई कि अन्त में यह जगह लोगों से भर गई है। मैं शुरू से इस इमारत से जुड़ा रहा हूँ, यह इमारत मेरे सामने बनी है, ख़ुशी है कि अब यह काग़ज़ों से निकल कर हक़ीक़त का रूप धार चुकी है। हर आर्कीटेक्ट के लिए आख़री प्रोडक्ट देखना बहुत बड़ी इच्छा होती है, चाहे वो घर हो, कोई म्यूज़ीयम हो या कोई इबादत की जगह। मुझे आज इस इमारत को देखकर बहुत ख़ुशी हो रही है, यह मेरे लिए एक बहुत ख़ूबसूरत इनाम है। अब यह डिज़ाइन के फ़ैज़ से निकल कर अनुकरणी शक्ल में आ चुकी है और अब यह समाज में एक सकारात्मक भूमिका अदा करती रहेगी। मुझे बहुत ख़ुशी है कि मैं इस महान इमारत की बुनियाद का हिस्सा रहा हूँ।

* एक प्रोफ़ैसर जो अपनी यूनीवर्सिटी की प्रैज़ीडैंट की नुमाइंदगी कर रहे थे, अपने भावनाओं का प्रकट करते हुए कहते हैं: मेरे लिए यह बहुत ही शानदार अवसर था। मैंने यह बात नोट की कि जैसे ही हुज़ूर हाल में तशरीफ़ लाए एक अजीब सा सुकून महफ़िल पर छा गई। मैं बिलकुल हुज़ूर के नज़दीक बैठा हुआ था और हुज़ूर के भाई जो यहां अमीर हैं, उनके भी क़रीब था। यह क़ुरब ऐसा था कि जैसे मैं जन्नत में हूँ। इस क़ुरब में बहुत जलाल और मज़बूती थी। हुज़ूर का कलाम का अन्दाज़ ऐसा दिल-नशीं है कि हर शब्द रूह में उतरता मालूम होता था। मुझे यह भी अवसर मिला कि मैं हुज़ूर से संक्षिप्त सी बात कर सकूं। मैंने हुज़ूर को बताया कि मैं कबाबीर भी गया हूँ और वहां पर भी हैफा में जमाअत की मस्जिद देखी है और अहमदिया जमाअत से मिला हूँ। यह मेरे लिए बहुत अच्छा तजुर्बा था। मैं जर्मन लिट्रेचर का प्रोफेसर हूँ। मैंने हुज़ूर से इस इच्छा का प्रकट किया है कि मैं हुज़ूर के अगले जलसा जर्मनी में भी शामिल होना चाहता हूँ। मुझे बहुत ख़ुशी हुई जब हुज़ूर ने फ़रमाया कि मैं ज़रूर शामिल हूँ। मुझे भावनात्मक तौर पर इस संक्षिप्त सी बातचीत ने बहुत प्रभावित किया है। मुझे यहां आकर बहुत ख़ुशी हुई।

हुज़ूर अनवर ने जो पड़ोसी की प्रशंसा की है। मुझे यह बहुत अच्छा लगा है। मेरी यूनीवर्सिटी यहां से एक मील के दूरी पर है। मेरे लिए यह बहुत हैरान करने वाली बात थी कि यूनीवर्सिटी के प्रैज़ीडैंट ने अपना पैग़ाम भिजवाते हुए कहा कि अब हम पड़ोसी हैं, आएं हम मिलकर छात्र-ए-और फ़िलाडेल्फ़िया के लोगों के एकता के लिए काम करें। जब हुज़ूर ने यही मज़मून बयान किया तो मुझे समझ आई कि यही हक़ीक़त है और एक दूसरे से सम्पर्क रखने से किया मुराद है। हुज़ूर अनवर ने जो इस शहर के लोगों के लिए नेक इच्छाओं को प्रकट किया है उनका सम्बन्ध अब से नहीं बल्कि आने वाले वक़्त से है। एक चीज़ जो मैंने हुज़ूर अनवर में देखी है वह यह है कि वो सिर्फ़ मौजूदा वक़्त की बात नहीं कर रहे होते, बल्कि उनकी नज़र आने वाले वक़्त पर होती है। उन्होंने आने वाले वक़्त तक भी फ़िलाडेल्फ़िया के लिए बरकतें छोड़ी हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि हुज़ूर अनवर ने यहां एक बीज बो दिया है, अब यह हमारा काम है कि इस की निगरानी करें और उसे बढ़ाएं और इस को भाईचारा और मुहब्बत के मज़बूत वृक्ष में तबदील करें।

*एक औरत ने अपने भावनाओं का प्रकट करते हुए कहा: हुज़ूर अनवर ने जो यह फ़रमाया है कि हम आप लोगों के आँसू पूँछेंगे। कितने लोग हैं जो यह कह सकते हैं। यह बहुत हैरत-अंगेज़ था। मैं अपनी भावनाओं पर क़ाबू नहीं रख सकी। अपना पैग़ाम देने के लिए ज़रूरी नहीं है कि ऊंची और जोशीली तक़रीर हो, वह पैग़ाम आपने बहुत ही मुहब्बत और प्यारे अंदाज़ में दे दिया। आपकी मौजूदगी ही हैरत-अंगेज़ असर रखती है। कम से कम मेरे लिए तो आपकी मौजूदगी ही काफ़ी है। आपकी ख़ामोश मौजूदगी ही सब कुछ कह देती है और यह ख़ामोशी जोशीली तक़रीरों से बहुत ज़्यादा असर रखने वाली है। यह मौजूदगी बहुत सुकून वाली है। हुज़ूर ने फ़रमाया है कि ज़रूरत पड़ने पर हर मुम्किना मदद के लिए तय्यार होंगे। मैंने कोई रहनुमा ऐसा नहीं देखा। चाहे कोई स्यासी लीडर हो, मज़हबी हो, या कोई भी। हमारे पास ऐसा कोई लीडर नहीं। हुज़ूर की मौजूदगी में एक अजीब सुकून है। मेरा यक़ीन करें, यह बहुत अजीब एहसास है। आपने मुझे यक़ीन दिला दिया है कि आप मेरी परेशानी और ज़रूरत के वक़्त मेरे साथ होंगे।मेरी बहुत ही ख़ुशक़िसमती है कि मैं यहां आई हूँ।

*एक लोकल औरत अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहती हैं: यह मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है कि मैं इस प्रोग्राम में शरीक हुई। मैं औरत की तरफ़ गई और सिर्फ कुछ मिनट वहां गुज़ारे और बहुत प्रभावित हुई। हुज़ूर अनवर का पैग़ाम बहुत ही शानदार था। मुझे दावत देने का बहुत शुक्रिया। हुज़ूर अनवर का ख़िताब

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

दुआ का इच्छुक

Sohail Ahmad Nasir and famil

jamaat Ahmadiyya idra,Dist: Proliya. West Bengal

सारी ज़रूरी बातें अपने अंदर लिए हुए था। आप लोगों का माटो मुहब्बत सब के लिए , नफ़रत किसी से नहीं एक विश्वव्यापी पैग़ाम है और यही वक़्त की ज़रूरत है।

*एक मेहमान ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: हुज़ूर अनवर के कलाम में बहुत प्रभाव है। हुज़ूर ने पैग़ाम दिया है कि वो और उनकी कम्यूनिटी प्रत्येक समय लोकल कम्यूनिटी की मदद के लिए तय्यार है। यह एक बहुत शानदार पैग़ाम है। हुज़ूर को देखना एक बहुत अच्छा तजुर्बा था।

*एक औरत ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा :ख़लीफ़ा ने जो पैग़ाम दिया है वह हमारे समाज के लिए बहुत ज़रूरी है। लोग जिस देश में रहते हैं, जहां टैक्स अदा करते हैं, जहां उनके बच्चे परवरिश पाते हैं, वह ऐसा देश नहीं होना चाहिए जहां किसी भी किस्म का समाज में ख़ौफ़ हो। इसलिए ख़लीफ़ा का अमन का पैग़ाम हमारे लिए और हमारे समाज के लिए एक उम्मीद की किरण है। यह पैग़ाम बहुत अहम है और हम सबको इस मक़सद को अपने सामने रखना चाहिए। इस माहौल में मुहब्बत और अमन फैलाना बहुत अहम क़दम है। यहां आकर बहुत ख़ुशी हुई है। आप लोगों का बहुत शुक्रिया।

*एक मेहमान ने कहा :ख़लीफ़ा का अमन का पैग़ाम बहुत अहम था। आपने फ़रमाया है कि एक दूसरे से मुहब्बत करो। यही अमन का स्रोत है। अगर एक दूसरे से मुहब्बत करेंगे एक दूसरे के हुक़ूक़ का ख़्याल रखेंगे तो अमन स्थापित हो जाएगा। यह बहुत अहम पैग़ाम है। यह प्रोग्राम बहुत आर्गनाइज़ड था। दावत देने का बहुत शुक्रिया।

*एक मेहमान ने अपने ख़्यालों को प्रकट करते हुए कहा :मुझे अफ़सोस हुआ है कि ख़लीफ़ा को यहां आकर इस किस्म का पैग़ाम देना पड़ा है कि इस्लाम से यहां के पड़ोसियों को कोई ख़तरा नहीं। बदक़िस्मती से हमारा समाज इस हद तक गिरावट का शिकार हो चुका है कि यहां आकर आपको यह कहना पड़ा है कि आप पड़ोसियों का ख़्याल करेंगे और मुहब्बत फैलाएंगे।

*एक और मेहमान ने कहा :बतौर ईसाई मैं मुहब्बत पर यक़ीन रखता हूँ। मैं इस जमाअत को तीस चालीस साल से जानता हूँ। यक़ीनन यह हमारे लिए अफ़सोस का मुक़ाम है कि ख़लीफ़ा को यह पैग़ाम देना पड़ा है। मैं यक़ीन रखता हूँ कि जो लोग यहां आएँगे, वह ख़ुदा की मुहब्बत प्राप्त करेंगे, अमन स्थापित करेंगे और लोगों की सेवा करेंगे। हुज़ूर अनवर की आने से यहां बरकत नाज़िल हुई है।

*एक मेहमान ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: यहां आने से पहले में हुज़ूर अनवर को नहीं जानता था। अब मैं आपसे मिल चुका हूँ। आप एक विश्व-व्यापी लीडर हैं और आपकी व्यक्तित्व इंतिहाई प्रभावित करने वाला है। मैंने आपके शब्द सुने हैं, आपकी सोच देखी है, यह बहुत ही महान व्यक्तित्व हैं और दुनिया को और अधिक ख़ूबसूरत बनाने के लिए बहुत ही महान पैग़ाम लेकर आए हैं। हम सबको इस पैग़ाम को अपनाना चाहिए। आज की दुनिया में यह पैग़ाम बहुत ही शानदार और ज़रूरी है। बर्दाश्त, आपसी मुहब्बत, एक दूसरे को बेहतर अंदाज़ में जानने की कोशिश करना, यह बहुत मज़बूत पैग़ाम है।

*Mr.Convery इन्सपैक्टर फ़िलाडेल्फ़िया पुलिस डिपार्टमैंट ने अपने विचार का प्रकट करते हुए कहा: हमारे शहर और समाज में अमन के स्थापना की लिए जमाअत अहमदिया की तरफ़ से पुलिस के साथ मिलकर काम करने की कोशिश निहायत ही ख़ुशी का कारण है। जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा का ख़िताब सुन कर हाल में बैठा हर शख़्स महसूस कर रहा था कि जैसे यह ख़िताब इसी के लिए है।

*Mr. Ryan Barksdale कम्यूनिटी रिलेशन ऑफीसर ने कहा: आपकी जमाअत की तरफ़ से बुलाए जाने पर निहायत ख़ुश हूँ। हमारे शहर में आपकी इस मस्जिद का उद्घाटन और इस्लाम के ख़लीफ़ा का आना इसी तरह उनका ख़िताब बेशक एक तारीख़ी बात है और आज हम भी इस तारीख़ी घटना को देख कर करके अमन की इस इतिहास का हिस्सा बन गए हैं जो हमारी आँखों के सामने प्रकट हो रही है।

* Hajja Kiniaya Sharrieff Ms. ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: मैं इस से पहले घाना, सालट पौंड के क़रीब जमाअत अहमदिया की मस्जिद और स्कूल देख चुकी हूँ। आज जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा को देखकर बहुत ख़ुशी हुई है। हुज़ूर का ख़िताब एक संक्षिप्त और निहायत ही पर कशिश ख़िताब था। आपके ख़िताब में खासतौर पर उन लोगों को भी सम्बोधन किया गया है जो कि ग़ैर मुस्लिम हैं और इस्लाम के बारे में कुछ ख़ास नहीं जानते। आपकी मस्जिद भी बहुत ख़ूबसूरत है। इसी तरह आपकी जमाअत की तरफ़ से सारी मेहमानों को जो सम्मान तथा इज़्ज़त के साथ नवाज़ा गया है इस ने भी मेरे दिल पर काफ़ी गहरा असर छोड़ा है।

*Ms. Queen Samiyah Mu`el ने कहा: आपकी मस्जिद बहुत ख़ू-बसूरत है और हमारे शहर के बीच में शहर की सुन्दरता को बढ़ाने का कारण बन गई है। मेरा सम्बन्ध सेनगाल के एक सूफ़ी मकतबा फ़िक्र से है। लिहाज़ा जब आपके ख़लीफ़ा का ख़िताब सुना तो उनकी हर बात ने दिल पर गहरा असर किया है आपकी जमाअत की मेहमान नवाज़ी ने भी मेरे दिल पर एक निहायत गहरा असर छोड़ा है।

*Mr.Ibrahim Branham ने अपने विचारों का प्रकट करते हुए कहा: आपकी जमाअत के सेवा भावना के काम इसी तरह हुकूमत के उच्च अफ़सरों के साथ आपके सम्बन्ध की अक्कासी उन अफसरों की यहां मौजूदगी से ज़ाहिर है। इसी तरह हर किस्म के वर्ग से लोग यहां देखकर दिल पर मुसर्रत हो गया है। मैंने जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा को पहली बार अपनी आँखों से देखा है। आपके ख़लीफ़ा की व्यक्तित्व निहायत वक़ार और रोब वाला है। इसी तरह उन का ख़िताब हर उस शख़्स को जो अपनी ज़ात में अमन तथा प्रेम का इच्छुक है ज़रूर अपनी तरफ़ खींचेगा। आपके ख़लीफ़ा की हमारे शहर में आना बेशक हमारे शहर की image को दुनिया के सामने बेहतर करके पेश करने में बहुत बड़ी भूमिका अदा करेगी।

*Ms. Roseanna Newood ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा:ख़लीफ़ा का ख़िताब समझने के लिहाज़ से निहायत ही सहल था। साफ़ मालूम होता था कि शब्द दिल की गहराईयों से निकल कर सामईन के दिल में दाख़िल हो रहे थे।मैं उमीद करती हूँ कि जमाअत अहमदिया की यह ख़ूबसूरत मस्जिद हमारे शहर में ख़ुशहाली का पेश-ख़ेमा साबित होगी। आपकी जमाअत ने हमारे शहर को एक नई उमीद प्रदान की है जिस के लिए हम दिल से आपकी जमाअत के मशकूर हैं।

*Ms. Diane Bridges ने बयान किया:जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के ख़लीफ़ा का पैग़ाम एक सकारात्मक पैग़ाम है और अपनी ज़ात में मुनफ़रद भी है क्योंकि आज के दौर में बहुत कम ऐसे लोग हैं जो दिल की गहराई से अमन के ख़ाहां हैं और अपने अनुकरण से इस का परचार करके दुनिया में अमन स्थापित कर रहे हैं।

*Mr. Bernard Smith ने कहा: मेरी उम्र 85 साल है और अपनी ज़िन्दगी में पहली बार ख़लीफतुल मसीह को देखकर और उनका रूह वर्धक ख़िताब सुन कर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैं उमीद करता हूँ कि ख़लीफतुल मसीह का ख़िताब हमारे शहर के निवासियों के लिए उमीद स्नेह लेकर प्रकट होगा। आपकी मस्जिद भी बहुत ख़ूबसूरत है। मैं वास्तव में आपकी मस्जिद बैतुल आफ़ियत के क़रीब ही रहता हूँ और इस मस्जिद की बुनियाद मेरी आँखों के सामने पूर्णता को पहुंची है। उसकी पूर्णता को देखकर निहायत ख़ुशी महसूस कर रहा हूँ।

*Sister Sylvia Strahler ने कहा: मैं पाकिस्तान में कैथोलिक कम्यू-निटी के मैडीकल मिशन के साथ 52 साल काम कर चुकी हूँ। आपके रहनुमा की तक़रीर से यह बात स्पष्ट होती है कि आप लोग समाज में अमन के स्थापना के लिए इसी तरह ग़रीबी दूर करने के लिए प्रत्येक समय तय्यार हैं। ख़ुदा आपकी मदद करे

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

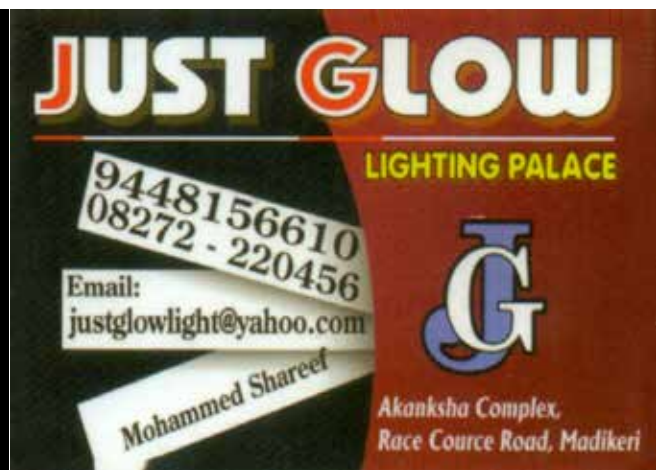

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ताकि आप समाज में अमन के स्थापना में अपना अहम भूमिका अदा कर सकें ।

*Ms.Terry Guerra ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: मैंने आज पहली बार जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के प्रोग्राम में शिरकत की है। और आज आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर सुन कर में इस नतीजा पर पहुंची हूँ कि आप लोग मज़हब इस्लाम के निहायत ही अच्छे सफ़ीर हैं। मैं चूँकि मज़हबन कैथोलिक ईसाई हूँ लिहाज़ा आपके ख़लीफ़ा का ख़िताब सुन के यूं महसूस होता था कि जैसे हमारी कैथोलिक कम्यूनिटी के पोप ख़िताब कर रहे हैं। आज में इस नतीजा पर पहुंची हूँ कि यद्यपि हमारा मज़हब आपके मज़हब से विभिन्न सही लेकिन दोनों धर्मों के पीछे एक ही रूह काम कर रही है।

*Sister Maria Hornung ने बयान किया :मैं आपकी कम्यूनिटी से पहले से परिचित हूँ। मैं घाना में इस वक़्त कैथोलिक मिशन के साथ काम कर चुकी हूँ जब आपके ख़लीफ़ा घाना मैं सेवा कर रहे थे। अत: आज आपकी मस्जिद में आकर आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर सुन कर मुझे यह एहसास होता था कि मानो मैं अपने ही घर में हूँ। जिस ख़ूबसूरत अंदाज़ में आपके ख़लीफ़ा ने ख़िताब फ़रमा कर अपने दृढ़ इरादा का हमारे शहर के लिए प्रकट किया है यक़ीनन हमारे दिलों में देर तक रहेगा।

20 अक्तूबर 2018 ई (दिनांक हफ़्ता)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 15 मिनट पर तशरीफ़ ला कर मस्जिद बैतुल आफ़ियत फ़िलाडेल्फ़िया में नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर ने दफ़्तरी डाक और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाएं और दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे। प्रोग्राम के अनुसार 10 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ लाए। मस्जिद के दरवाज़े पर कैनेडा से आने वाले दो बच्चे अज़ीज़म फ़ारान तारिक़ और प्रिया सुबीका तारिक़ खड़े थे। यह दोनों बहन भाई हैं। उन्होंने निवेदन किया कि हम दोनों क़ुरआन करीम हिफ़्ज़ कर रहे हैं। हुज़ूर अनवर के पूछने पर लड़के ने बताया कि वह साढ़े सात पारे हिफ़्ज़ कर चुका है और बच्ची ने बताया कि वह अभी दूसरा पारा हिफ़्ज़ कर रही है। दोनों ने हुज़ूर अनवर से प्यार प्राप्त किया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर मस्जिद के अंदर तशरीफ़ ले आए जहां मजलिस आमला जमाअत फ़िलाडेल्फ़िया के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर के साथ ग्रुप फ़ोटो बनवाने का सौभाग्य पाया। इस अवसर पर स्थानीय जमाअत के कुछ बुज़ुर्ग अफ़्रीकन अमरीकन लोगों ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का अवसर प्राप्त किया। जब हुज़ूर अनवर मस्जिद के दरवाज़े से बाहर आने लगे तो एक नौजवान अपने छोटे बेटे को उठाए हुए खड़ा था। हुज़ूर अनवर ने शफकत करते हुए बच्चे को प्यार किया और उसके गालों पर अलैसल्लाहो बेकाफ़िन अब्दहू वाली अँगूठी लगाई। इस पर वह ख़ुशनसीब नौजवान ख़ुशी से फूला ना समाता था। इस के बाद हुज़ूर अनवर मस्जिद के बाहरी सेहन में तशरीफ़ ले आए जहां जमाअत के लोगों मर्दो औरत की एक बड़ी संख्या मौजूद थी। बच्चियां ग्रुपस की सूरत में दुआ की नज़्में और गीत पढ़ रही थीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बाहरी सेहन में दो पौधे लगाए। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

अमरीका के पहले अहमदी का वर्णन

आज फ़िलाडेल्फ़िया से बाल्टी मोर रवानगी थी और वहां पर मस्जिद बैतुल समद के उद्घाटन के बाद वाशिंगटन रवानगी का प्रोग्राम था। रवानगी से पहले अमरीका के पहले अहमदी Dr. Anthony George Baker की क़ब्र पर दुआ का प्रोग्राम भी था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने महोदय का ज़िक्र अपने ख़ुत्बा जुम्अ: 19 अक्तूबर 2018 ई में फ़रमाया था।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किताब बराहीन अहमदिया हिस्सा पन्चम में जॉर्ज ए बेकर का ज़िक्र इन शब्द में किया है: ऐसा ही और कई अंग्रेज़ इन देशों में इस सिलसिला की प्रशंसा करने वाले हैं और अपनी मुवाफ़िक़त इस से ज़ाहिर करते हैं। अत: डाक्टर बेकर जिनका नाम ए जॉर्ज बेकर नंबर 404 सीस कोई हाना एवेन्यू (Susquehanna Avenue) फ़िलाडेल्फ़िया अमरीका, मैगज़ीन रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ में मेरा नाम और वर्णन पढ़ कर अपनी चिट्ठी में यह शब्द लिखते हैं मुझे आपके इमाम के ख़्यालात के साथ बिलकुल इत्तिफ़ाक़ है। उन्होंने इस्लाम को ठीक इस शक्ल में दुनिया के सामने पेश किया जिस शक्ल में हज़रत नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पेश किया था।

(रुहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 21, ब्राहीन अहमदिया हिस्सा पांच , पृष्ठ 106)

अख़बार अल्फ़ज़ल 22 जुलाई 1920 ई में हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ि की अमरीका से भिजवाई हुई निम्नलिखित रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिस में आप ने फ़िलाडेल्फ़िया के डाक्टर बेकर के इस्लाम क़बूल करने का ज़िक्र किया है।

आजिज़ राक़िम को इन थोड़े से दिनों में जो अमरीका में दाख़िल हुए गुज़रे हैं, बावजूद बड़ी मुश्किलें और रुकावटों के जो द्वेष वाले ईसाईयों की तरफ़ से पेश आएं कई कामयाबी प्राप्त हुई। फ़लहमदु लिल्लाह अला ज़ालिक। इस वक़्त 29 नए जैंटलमैन और लेडियां विनीत की तब्लीग़ से इस्लाम धर्म में दाख़िल हो चुके हैं जिनके नाम नई बैअत के साथ इस्लामी नाम निम्नलिखित हैं।

2-1। डाक्टर जॉर्ज बेकर वम्सटर अहमद एंडरसन। यह हर दो आदमी एक समय से विनीत के साथ ख़त तथा पत्र लिखते थे और मुद्दत से मुसलमान हो चुके हुए हैं। मुख़लिस मुसलमान हैं। मैं ज़रूरी समझता हूँ कि उनका नाम इस सूचि में सबसे अव्वल रखा जाए। बाद में आप ने रिपोर्ट में अन्य लोगों का ज़िक्र किया।

डाक्टर बेकर की वफ़ात 1918 ई में हुई। स्थानीय जमाअत ने के बारे में इदारों से सम्पर्क करके और सौ साल का पुराना रिकार्ड देखकर उनकी क़ब्र तलाश की है। महोदय फ़िलाडेल्फ़िया के एक क़ब्रिस्तान Laural Hill में दफ़न हैं।

हुज़ूर अनवर की फ़िलाडेल्फ़िया से रवानगी और जॉर्ज बेकर साहिब की क़ब्र पर दुआ

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ 11 बजकर 20 मिनट पर अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर को विदा कहने के लिए जमाअत के लोगों मर्दों तथा औरतों की एक बड़ी संख्या सुबह से मस्जिद बैतुल आफ़ियत के बाहरी सेहन में जमा थी। बच्चियां ग्रुप्स की सूरत में विदाई नज़्में पढ़ रही थीं। हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और यहां से रवानगी हुई। पुलिस की गाड़ियां क़ाफ़िला को escort कर रही थीं।

11 बजकर 35 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला क़ब्रिस्तान में तशरीफ़ लाए और मरहूम डाक्टर जॉर्ज बेकर की क़ब्र पर दुआ की और इस अवसर पर सदर साहिब जमाअत फ़िलाडेल्फ़िया आदरणीय मुजीबुल्लाह चौधरी साहिब से पूछने फ़रमाया कि आपने मरहूम की क़ब्र किस तरह तलाश की है। इस पर महोदय ने बताया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी किताब में जहां उनका ज़िक्र फ़रमाया है वहां उनके घर का पूर्ण पता भी लिखा हुआ है। अत: इस पता की बदौलत जो यहां क़रीबी क़ब्रिस्तान है वहां की इंतिज़ामीया और कौंसल इत्यादि से सम्पर्क करके 100 साला पुराना रिकार्ड निकलवा कर यह क़ब्र तलाश की गई है।

मरहूम डाक्टर जॉर्ज बेकर साहिब के तसव्वुर और वहम तथा गुमान में भी यह नहीं होगा कि जिस मसीह अलैहिस्सालम की उन्होंने तस्दीक़ की है ओर उसे क़बूल किया कभी उन के कोई ख़लीफ़ा सौ साल बाद उन की क़ब्र पर आएँगे और उन के लिए दुआ होगी। व ज़ालिक फ़ज़लुल्लाह अलै मन्नयशाअ।

इस के बाद यहां से रवानगी हुई। शहर से बाहर जाने के लिए वह रास्ता धारण किया गया था जो समुंद्र के तटके इस हिस्सा से गुज़रता था जहां समन्द्री जहाज़ लंगर अंदाज़ होते हैं और 1920 ई में हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ि का जहाज़ इसी पोर्ट पर लंगर अंदाज़ हुआ था जहां आप रज़ि को जहाज़ से उतरने के बाद क़ैद कर लिया गया था। यहां कुछ क्षण के लिए रुके। इंतिज़ामीया ने बताया कि यह वह जगह है जहां हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ि को क़ैद किया गया था। इस के बाद पुलिस के escort में बाल्टी मोर की तरफ़ सफ़र जारी रहा। Pennsylvania स्टेट की सीमा में यहां की पुलिस ने escort किया। इसके बाद जब Delaware स्टेट में दाख़िल हुए तो वहां की पुलिस ने क़ाफ़िला को escort किया। फिर Maryland स्टेट में दाख़िल हुए तो यहां की पुलिस ने क़ाफ़िला को escort किया। बाल्टी मोर मेरी लैंड स्टेट में है। मेरी लैंड स्टेट में जब बाल्टी मोर शहर के क़रीब पहुंचे तो पुलिस का एक हैलीकाप्टर भी स्क्योरिटी की डयूटी पर था और निरन्तर क़ाफ़िला के ऊपर और मस्जिद के एरिया में चक्कर लगाता रहा।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 1 August 2019 Issue No. 31

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हज़रत ग़ुलाम रसूल राजेकी रज़ि की ईमान वर्धक घटनाएं

हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल साहिब राजेकी रज़ि अल्लाह तआला अन्हो फरमाते हैं कि

बैअत का आयोजन

मैं और मौलवी इमामदीन साहिब पवित्र कादियान पहुंचे और मस्जिद मुबारक में जाने के लिए इस के भीतरी सीढ़ियों पर चढ़ने लगे तो मैं वहीं खड़े खड़े हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के सेवा में प्रस्तुत करने के लिए कुछ नज़राने की रक़म निकालने लगा और मौलवी साहिब इतनी देर में मस्जिद में बारगाहे नबुव्वत में जा पहुंचे। हुज़ुर में मौलवी साहिब को हाथ मिलाने का सौभाग्य प्रदान करते हुए फरमाया

" वह लड़का जो आप के पीछे आ रहा था उस को बुलाओ।"

अत: मौलवी साहिब वापस लौटे और सीढ़ी पर आकर कहने लगे कि मियां गुलाम रसूल आप का हज़रत साहिब याद कर रहे हैं। मैं यह सुनते ही हुज़ूर की सेवा में जा पहुंचा और जब हाथ मिलाने तथा मसीह के दर्शन से लाभान्वित हुआ तो मुझ पर कुछ इस तरह की अवस्था छाई कि मैं अपने आप हुज़ूर के कदमों में जा गिरा और रोते रोते मेरी हिचकी बंध गई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह उस वक़्त निहायत ही शफ़क़त से मेरे सिर और मेरी पीठ पर मसीहाई का हाथ फेरते जाते थे और मुझे दिलासा दिए जाते थे। जब मेरी तबीयत कुछ संभली तो मैंने अपने सिर को हुज़ूर के पैरों से उठाया और मौलवी इमाम उद्दीन साहिब रज़ि और कुछ अन्य सहाबा के साथ मैं हुज़ूर के दस्त बैअत से सफल हुआ। और इस दौरान में यह अजीब घटना हुई कि हज़रत अक़दस अलैहिस्सालम ने मुझे देखे बग़ैर ही मौलवी इमामुद्दीन साहिब रज़ि से बिना पूछे ही यह इरशाद फ़रमाया कि मौलवी साहिब वह लड़का जो आपके पीछे आ रहा था इस को बुलाओ। निसन्देह यह बात हज़ूर अक़दस अलैहिस्सलाम के अल्लाह तआला के नूर से देखने की एक दलील है और मेरे लिए एक निशान है।

मौलवी ग़ुलाम रसूल साहिब जवान सालिह करामाती

वर्णन करते हैं कि इस आरंम्भिक ज़माना में जब कि तथा कथित उल्मा गांव गांव मेरे कम ज्ञान और कुफ्र की चर्चा कर रहे ते ख़ुद मेरे ख़ुदा ने इल्हाम के द्वारा मुझे यह ख़ुश ख़बरी दी।

"मौलवी ग़ुलाम रसूल साहिब जवान सालिह करामाती"

अत: इस अल्लाह तआला के इल्हाम के बाद मेरे अल्लाह तआला ने जहां मुझे बड़े बड़े मौलवियों के मुकाबला में विजयी प्रदान किया वहां मेरे द्वारा सय्यदना हज़रत इमाम ज़मान अलैहिस्सलाम की बरकत इंज़ारी और तब्शीरी करामतों को प्रकट फरमाया। जिस का एक ज़माना गवाह है।

अल्लाह तआला का समर्थन

मेरी बिरादरी में से मेरे एक चचेरे भाई मियां ग़ुलाम अहमद थे उनकी कुछ जायदाद गांव लंगा ज़िला गुजरात में भी थे एक बार उन्होंने मुझे एक तहरीर के काम के लिए फ़र्माइश की जिसके पालन के लिए में उनके साथ गांव लंगा चला आया। गर्मियों का मौसम था इस लिए मैं दोपहर का वक़्त अक्सर उनके दालान के पीछे एक कोठरी में गुज़ारा करता था। एक दिन आदत के अनुसार मैं दोपहर को इस कोठरी में सौ रहा था। मेरी आँख खुली तो मैंने सुना कि ग़ुलाम अहमद की ख़ाला और माता कह रही थीं कि इस ...(ग़ुलाम रसूल)का हमें बड़ा अफ़सोस है कि गांव गांव और घर-घर में लोग उस की बुराई करते हैं। उसने तो मिर्ज़ाई हो कर हमारे ख़ानदान की नाक काट दी है। संयोग की बात है कि इस रोज़ बराबर की कोठरी में भाई ग़ुलाम भी सोया हुआ था। उसने बेदार होते ही उनकी यह बुरी बातें सुनें तो कहने लगा तुम क्या बकवास कर रही हो। मैंने तो अभी अभी ख़्वाब में देखा है कि ग़ुलाम रसूल पर आसमान से इतना नूर बरस रहा है कि उसने चारों तरफ़ से इस को घेर लिया है ।

तुम्हें क्या मालूम है कि तुम जिसे बुरा समझती हूँ वह ख़ुदा के नज़दीक बुरा ना

पृष्ठ 1 का शेष

वस्सलम के बारे में विभिन्न प्रकार के इल्ज़ाम (नऊज़ बिल्लाह) लगाते हैं। ऐसी हालत में भी अगर कोई मुसलमान अपने धर्म और अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त और ग़ैरत नहीं रखता तो इस से बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा?

अगर तुम अपने बच्चों को ईसाइयों, आर्यों और दूसरों की सोहबत से नहीं बचाते या कम से कम नहीं बचाना चाहते तो याद रखो ना सिर्फ अपने ऊपर बल्कि क़ौम पर और इस्लाम पर जुल्म करते हो और बड़ा भारी ज़ुल्म करते हो। इस के यह अर्थ हैं कि मानो तुम्हें इस्लाम की कुछ ग़ैरत नहीं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त तुम्हारे दिल में नहीं।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 2 से 3)

☆ ☆ ☆

हो। इतने में मैं भी कोठरी से बाहर निकल आया और उनको अहमदियत के बारे में समझाता रहा मगर उन पर कोई असर ना हुआ। बल्कि यही ग़ुलाम अहमद जिस पर अल्लाह ताला ने रोया के माध्यम से इतमाम-ए-हुज्जत कर दी थी मेरा इतना मुख़ालिफ़ और दुश्मन हो गया कि उल्मा को बुलाकर भी अहमदियत पर हमला करवाता और मुझे ज़लील करने की कोशिश में लगा रहता। आख़िर मेरे मौला करीम ने मेरी सहायता के लिए गांव राजेकी में ताऊन के अज़ाब को भेज दिया। और ग़ुलाम अहमद और इस के साथ वालों का सफ़ाया कर दिया। ताऊन की महामारी के दौरान में तक़्वा तथा नेकी को इख़तियार करने के स्थान पर जब उन लोगों ने ये मन्सूबा सोचा कि अगर कोई अहमदी मर जाए तो ना उस की क़ब्र खोदी जाए और ना उसे अपने क़ब्रिस्तान में दफ़न होने दिया जाये तो मैंने ख़्वाब में देखा कि सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमारे मकान के ऊपर खड़े हैं और हिफ़ाज़त फ़र्मा रहे हैं। अत: हमारा घर हज़रत अक़दस अलैहिस्सालम की बरकत से महफ़ूज़ रहा मगर इन बुरा चाहने वालों के घर ताऊन से रोने के स्थान बन गए। फ़हल मन मद्दकर।

दुआ और शिफ़ा

गांव राजेकी में एक बार चौधरी अल्लाह दाद ख़ां पिता चौधरी आलिम ख़ान साहिब का तीन चार साल का बच्चा बहुत बीमार हो गया और इस की हालत मायूसी वाली हो गई। इस वक़्त चौधरी अल्लाह दाद ख़ान साहिब ने मुझे बुला कर वह बच्चा दिखाया।(वह बच्चा बिलकुल हड्डियों का ढांचा नज़र आता था) और दुआ का निवेदन किया। मैंने उस वक़्त दुआ भी की और एक नुस्ख़ा भी बताया जो उसे इस्तिमाल किराया गया। इस के बाद मैंने चौधरी अल्लाह दाद ख़ां से कहा कि जब मैं साल के बाद आऊँगा तो ये लड़का इतना तंदरुस्त होगा कि मैं उसे पहचान भी ना सकूँगा। अत: ख़ुदा ताला के फ़ज़ल से ऐसा ही हुआ।

ईलाज बेरोज़गारी

गांव राजेकी की एक अहम अहमदी ख़ातून जो बाद में हिजरत कर के कादियान मुक़द्दस चली गई थी। उसने एक बार मुझे ख़त लिखा कि मेरे 2 लड़के बावजूद अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के अभी तक बेकार हैं। आप उनके लिए दुआ फ़रमाएं कि अल्लाह तआला उनके लिए कोई रोज़गार की अवस्था पैदा कर दे। चूँकि मैं इस इस औरत के ससुर का एहसानमंद था। इसलिए मैंने उस के लड़कों के लिए लगातार कई रोज़ तक दुआ की। यहां तक कि अल्लाह तआला की तरफ़ से रोया के द्वारा मुझे बताया गया कि अगर उस के लड़के तीन लाख मर्तबा दुरूद शरीफ़ का विर्द करेंगे तो उनकी तीन सौ रुपया तनख़्वाह लग जाएगी और डेढ़ लाख मर्तबा दुरूद शरीफ़ का विर्द करेंगे तो डेढ़ सौ रुपया की तनख़्वाह लग जाएगी। अत: मैंने उसी दिन इस रोया की सूचना उस को दे दी थी। मालूम नहीं कि इस के लड़कों ने यह अमल(कर्म) किया था या नहीं।

(उद्धरित हयाते कुदसी)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad